Ministry of Culture
Government of India

कला वर्मिनम् प्रतिरिणाः
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

# स्मारिका

## इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

एवं

## हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

के संयुक्त तत्वावधान में

## भारतीय भाषा दिवस 2024

के उपलक्ष्य में आयोजित

### मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह

बुधवार

**11** दिसंबर 2024

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
'भारतीय भाषा उत्सव'
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
संस्कृति मंत्रालय
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
2024

# स्मारिका

## इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

एवं

## हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

के संयुक्त तत्वावधान में

## भारतीय भाषा दिवस 2024

के उपलक्ष्य में आयोजित

भारतीय भाषा दिवस 2024

**मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह**

संयोजक:
राजभाषा अनुभाग, इं. गां. रा. क. केन्द्र

बुधवार
11 दिसंबर 2024

कार्यक्रम स्थल
डॉ. अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र
15, जनपथ रोड, विंडसर प्लेस
नई दिल्ली, दिल्ली 110001

भारतीय भाषा दिवस

11 दिसम्बर

# चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती

11 दिसंबर 1882 - 11 सितम्बर 1921

**प्रसिद्ध तमिल कवि और स्वतंत्रता सेनानी महाकवि सुब्रमण्यम भारती अपने समय में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु माने जाते थे । भारत सरकार द्वारा उनके जन्मदिन (11 दिसम्बर) को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाना एक बार फिर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा।**

चित्रास्वामी सुब्रमण्यम भारती एक तमिल लेखक, कवि, पत्रकार, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और बहुभाषाविद् थे। उनको 'महाकवि भारतियार' के नाम से भी जाना जाता है। कविता में उत्कृष्टता के लिए उन्हें भारती' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। वह आधुनिक तमिल कविता के अग्रणी थे और उन्हें सर्वकालिक महान तमिल साहित्यकारों में से एक माना जाता है। वह अपने उपनाम भारती/भारतियार' और दूसरी उपाधि 'महाकवि भारती' ('महान कवि भारती) से भी लोकप्रिय हैं। उनके कई कार्यों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देशभक्ति जगाने वाले गीत शामिल थे। उन्होंने महिलाओं की मुक्ति के लिए लड़ाई लड़ी, बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जाति व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया और समाज एवं धर्म में सुधार के लिए खड़े हुए।

1882 में तिरुनेलवेली जिले (वर्तमान थूथुकुडी) के एट्टायपुरम में जन्मे भारती की प्रारंभिक शिक्षा तिरुनेलवेली और वाराणसी में हुई और उन्होंने द हिंदू, बाला भारतम, विजया, चक्रवर्ती, स्वदेश मित्रम और भारत सहित कई समाचार पत्रों में एक पत्रकार के रूप में काम किया। वे बाहरी दुनिया को देखने के बड़े उत्सुक थे। विवाह के बाद सन् 1898 में वे उच्च शिक्षा के लिये बनारस चले गये। अगले चार वर्ष उनके जीवन में "खोज" के वर्ष थे। बनारस प्रवास की अवधि में उनका हिन्दू अध्यात्म व राष्ट्रप्रेम से साक्षात्कार हुआ। सन् 1900 तक वे भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में पूरी तरह जुड़ चुके थे। 1908 में, ब्रिटिश सरकार द्वारा भारती के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था, जिसके परिणामस्वरुप उन्हें पांडिचेरी जाना पड़ा, जहां उन्होंने दस वर्ष वनवासी की तरह बिताए। इसी दौरान उन्होंने कविता और गद्य के माध्यम से आजादी की बात कही। 'साप्ताहिक इंडिया' के द्वारा वह आजादी की प्राप्ति, जाति भेद को समाप्त करने और राष्ट्रीय जीवन में नारी शक्ति की पहचान के लिए जुटे रहे। आजादी के आन्दोलन में 20 नवम्बर 1918 को वे जेल गए।

तमिल साहित्य पर उनका प्रभाव अभूतपूर्व है, हालाँकि ऐसा कहा जाता है कि वे 3 गैर-भारतीय विदेशी भाषाओं सहित लगभग 32 भाषाओं में पारंगत थे। उनकी पसंदीदा भाषा तमिल थी। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विषयों पर लेखन किया। भारती द्वारा रचित गीत और कविताएँ तमिल सिनेमा में अक्सर उपयोग किए जाते हैं और दुनिया भर के तमिल कलाकारों के साहित्यिक और संगीतमय प्रदर्शनों में प्रमुख बन गए हैं।

# शुभकामना संदेश

## माननीय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

**केन्द्रीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार**

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार' और 'हिंदुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली' के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने वाली 'स्मारिका' के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

भारतीय भाषाएं हमारी पहचान, हमारे गौरव और हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं। हमारी भाषाओं में न केवल हमारे विचार और भावनाओं का प्रतिविम्ब है, बल्कि ये हमारी जीवनशैली, सभ्यता और इतिहास की साक्षी भी हैं। भारतीय भाषा दिवस इस विशेष उद्देश्य के लिए मनाया जाता है कि हम अपनी भाषाओं के महत्व को समझें और उनका संरक्षण एवं संवर्धन करें।

हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता और भाषाई समृद्धि को वैश्विक मंच पर मान्यता मिलनी चाहिए। इस अवसर पर हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे साहित्य, कला और भाषाओं को बढ़ावा दिया जाए और एक ऐसी साझा भाषा और संस्कृति का निर्माण हो, जो हमारे समाज की विविधता में एकता को दर्शाए।

इस स्मारिका के माध्यम से हम सभी को भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और योगदान को समझने का एक अवसर प्राप्त होगा। सभी आयोजकों एवं सहयोगियों का इस शुभ अवसर पर हार्दिक अभिनंदन और शुभकामनाएं।

# शुभकामना संदेश

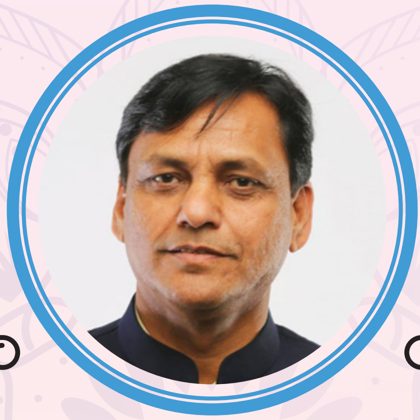

## माननीय श्री नित्यानन्द राय

गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के अवसर पर बुधवार, 11 दिसम्बर, 2024 को डॉ. अंबेडकर इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारतीय भाषाएं विश्व की समृद्ध भाषाओं में से एक है। भारत भौगोलिक रूप से जितना विशाल है उतना ही सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भी है। यहां असंख्य भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं जो सह-अस्तित्व के माध्यम से अनेकता में एकता का सूत्रपात करती हैं, भारतीय भाषाओं के साझें भाषाई गुण और आपसी सामंजस्य देश की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। भारत की विविध भाषाई परंपराएं राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करती हैं एवं एक सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करती हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में निपुण एवं पारंगत शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सम्मानित करने का यह कार्य भारतीय भाषाओं निपुण एवं को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस भव्य कार्यक्रम के माध्यम से यह केन्द्र संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली "स्मारिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक सिद्ध होगी। मैं अपनी ओर से इस कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, राजभाषा अनुभाग एवं उनके सहयोगियों की सराहना करता हूं तथा उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

# शुभकामना संदेश

**श्री राम बहादुर राय**
**अध्यक्ष, इं. गां. रा. क. केन्द्र**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय भाषा दिवस' के अवसर पर 11 दिसम्बर, 2024 को डॉ. अंबेडकर इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में भारतीय भाषा उत्सव' के उपलक्ष्य में भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारत एक सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधिता वाला देश हैं। सद्भाव एवं भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातावरण विकसित करने की दिशा में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का यह एक अद्भुत प्रयास हैं। भारतीय भाषाएं हमारा गौरव, हमारी संस्कृति और विरासत की प्रतीक है। भाषाओं के उन्नयन में ही एक समाज और राष्ट्र की वास्तविक उन्नति संभव है। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना और उन्नति का मूल आधार है। भाषाएं हमारी सामाजिक सांस्कृतिक पहचान के लिए एक महत्त्वपूर्ण कड़ी तथा सामूहिक ज्ञान और बुद्धिमत्ता का भंडार भी है जिसे संरक्षित करना हमारा परम कर्तव्य है।

यह कार्यक्रम निश्चित रुप से भारतीय भाषओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में केन्द्र द्वारा उठाया गया एक सराहनीय कदम है। इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली "स्मारिका" का कार्य महत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय है। मैं इस पुनीत कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी तथा उनके सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भारतीय भाषा दिवस

## भारतीय भाषा दिवस

# अवधारणा पत्र

**भारतीय भाषा समिति**
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में सुझाया गया है कि देश के छात्रों को एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के अंतर्गत ग्रेड 6-8 में भारत की भाषाएं' (द लैंग्वेजेज ऑफ़ इंडिया) पर एक मजेदार परियोजना/गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इस प्रकार की परियोजना/गतिविधि में, छात्रों को अधिकांशरुप से प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जानने में मदद मिलेगी, जिसके अंतर्गत वे समान ध्वन्यात्मक और वैज्ञानिक रुप से व्यवस्थित वर्णमाला और लिपियों, उनकी सामान्य व्याकरणिक संरचनाओं, संस्कृत तथा अन्य शास्त्रीय भाषा से इनकी शब्दावली के स्रोत और उद्भव को ढूंढने से लेकर इन भाषाओं के समृद्ध अंतर-प्रभाव और अंतरों को समझ सकेंगे। छात्र विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं, जनजातीय भाषाओं की प्रकृति और संरचना, भारत की हर प्रमुख भाषा में कुछ पदों व पंक्तियों तथा प्रत्येक के समृद्ध और उभरते साहित्य के बारे में भी सीख पाएंगे। इस प्रकार की गतिविधियां उन्हें भारत की एकता, सुंदर सांस्कृतिक विरासत तथा इसकी विविधता की भावना से ओतप्रोत करेगी और अपने पूरे जीवन भर वे भारत के अन्य हिस्सों के लोगों से मिलने-जुलने में सहज महसूस करेंगे।

अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने तथा पड़ोसी भाषा' के प्रति प्रेम और आनंद की अनुभूति के लिए 'भाषाई सौहार्द' विकसित करने की आवश्यकता है। किसी अन्य भारतीय भाषा को सीखना/बोलना एक फैशन/प्रतिष्ठा तथा आनंद का विषय बनना चाहिए।

इसी भावना को ध्यान में रखते हुए सुब्रमण्यम भारती के जन्म जयंती 11 दिसंबर को भारतीय भाषा दिवस के रुप में मनाया जाएगा। उस दिन 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन किया जाएगा जिसके निम्नलिखित उद्देश्य होंगे:

- छात्रों को भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी देना।
- लोगों को कुछ और भारतीय भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- संस्कृति, कला आदि में विविधता का उत्सव मनाने के लिए और लोगों को भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सद्भाव और अखंडता का अनुभव कराना।
- यह दिखाना कि भाषा सीखना कैसे एक मनोरंजक और आनंददायी अनुभव हो सकता है।
- राष्ट्र के विकास और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के लक्ष्य को साकार करने के लिए भारतीय भाषाओं की आवश्यकता को रेखांकित करना।

**कहाँ और कौनः**

- भारतीय भाषा उत्सव को विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में आयोजित किया जाएगा।
- ये संस्थान अपने पड़ोसी संस्थानों/महाविद्यालयों/विद्यालयों के छात्रों एवं उनके अभिभावकों को भी उत्सव में आमंत्रित कर सकते हैं।
- इसमें विभिन्न भाषा संघ, भाषा क्लब, सांस्कृतिक/कला/ साहित्यिक संस्थान भी शामिल हो सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार के भाषाई अनुभव को उत्सव में शामिल करने के लिए पड़ोसी कस्बों/जिलों/राज्यों के लोगों या संस्थाओं को भी आमंत्रित किया जा सकता है।

**क्याः**

- विभिन्न भाषाओं में भाषण, गायन, लेखन आदि जैसी प्रतियोगिताएं।
- उन छात्रों का अभिनंदन जो बहुत सारी भाषाएं जानते हैं या जो प्रमुख भारतीय भाषाओं की लिपियों को पढ़ सकते हैं।
- विभिन्न भाषाओं में नाटक, कला प्रदर्शन, संगीत, भाषाई खेल आदि।
- विभिन्न भाषाओं को बोलने की आनंददायी अनुभूति कराने वाले स्टॉल/काउंटर/पटल।
- विभिन्न भाषाई क्षेत्रों से संबंधित फूड कार्नर।
- ऐसा पहनावों की प्रदर्शनी जो विभिन्न भाषाई समुदायों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- भारत की भाषाई विविधता/संपन्नता और भविष्य के भारत "एक भारत श्रेड भारत के लिए भारतीय भाषाओं के महत्व को दर्शाती प्रदर्शनी।
- एक बहुभाषी समाज के संज्ञानात्मक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक लाभ को समझाने वाले प्रसंगों, और ऑनलाइन संसाधनों व गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान करना।

एक प्रौद्योगिकी जोन बनाना जो दर्शाए कि लोग नई तकनीकों के साथ भाषाएं कैसे सीख सकते हैं।

**उत्सव के अपेक्षित परिणामः**

- यह लोगों में अपनी मातृभाषा पर महारत हासिल करने के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं को भी सीखने के प्रति उत्साह को गति देगा।
- यह व्यक्तियों तथा वृहत समाज में बड़े स्तर पर सांस्कृतिक जागरुकता और समावेशी चिंतन को बढ़ावा देगा।
- यह भारतीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी के अनुकूलन को बढ़ावा देगा।
- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं का उपयोग करने के शैक्षिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लाभों का पता लगाएगा तथा इससे सम्बंधित विमर्शों को उभारेगा।

# डॉ. सच्चिदानंद जोशी

सदस्य सचिव, इ.गा.रा.कला केन्द्र

## भारतीय भाषा दिवस : अवसर संकल्प का

कहा जाता है कि भाषायें किसी भी राष्ट्र की वंशावली होती हैं। भारत भाषाई दृष्टि से एक समृद्ध देश है, जहां विश्व की सर्वाधिक भाषाएं एवं बोलियां विद्यमान हैं। भारत की भाषाई विविधता समूचे विश्व में कौतूहल का विषय है। भारत की स्वतंत्रता के बाद जिस तरह की शिक्षा प्रणाली भारत में लागू की गई उसने भारतवासियों के मन में अपनी मातृभाषा के प्रति अलगाव पैदा किया तथा दूरियां बढ़ाई। परिणामतः हम अपनी मातृभाषाओं से ही बिछड़ते चले गए। भारत के भाषाई वैभव को दरकिनार करते हुये विदेशी भाषाओं का सहारा लिया गया तथा उन्हें बढ़ावा दिया गया।

भाषाएं भविष्य को संस्कार भी देती हैं और संवाद भी। लेकिन उस भाषा का सही प्रयोग मनुष्य को मनुष्य बनाता है। टेक्नोलॉजी के वर्तमान दौर में जहां बहुत सारी बातें सहज और सरलता से उपलब्ध हैं तथा न्यूनतम प्रयासों से जटिल से जटिल बातें सुझाई जा सकती हैं वहां भाषा को गौण मानकर उसके प्रति अगंभीर दृष्टिकोण अपनाया गया। सामान्य बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग इतना अधिक बढ़ गया कि भाषा का लालित्य, सौष्ठव और सौंदर्य समाप्त होता चला गया। यह भी दुखद बात है कि शिक्षा के अलग-अलग स्तर पर भाषा के परिष्कार पर जितना ध्यान दिया जाना चाहिए उतना नहीं दिया गया। भारत में 1600 से अधिक भाषाएं तथा बोलियां प्रचलित हैं। लेकिन उस भाषा के कम प्रयोग के कारण भाषाओं का लुप्त होना भी तेजी से जारी रहा। ऐसे में वह दिन दूर नहीं जब हमें अपनी उन तमाम भाषाओं से हाथ धोना पड़ेगा जिनमें हमारा प्रचुर साहित्य रचा गया है।

विगत कुछ वर्षों में भारत का सांस्कृतिक नवजागरण हो रहा है तथा अपनी भाषाओं के प्रति, अपनी संस्कृति के प्रति तथा अपनी परंपराओं के प्रति एक नया विश्वास तथा आस्था पैदा हुई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सन् 2021 के स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से जिन पंच प्रण का आह्वान किया था उसमें औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति का आह्वान प्रमुख था। उसी के अनुपालन में सन् 2022 से बहुभाषी विद्वान और स्वतंत्रता सेनानी महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती के जन्मदिन 11 दिसंबर को भारतीय भाषा दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। इसका उद्देश्य भारत की संस्कृति और कला में विविधता का उत्सव मनाना, राष्ट्र की एकता, सद्भाव और अखंडता को सुदृढ़ करना और अपनी मातृभाषा के प्रति अनुराग पैदा करना था।

भारतीय भाषाओं पर केन्द्रित, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के साथ मिलकर कई महत्वपूर्ण आयोजन किये हैं। पिछले साल भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर सन् 2023 में एक विशाल आयोजन कर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के ऐसे स्कूली विद्यार्थियों को पदक एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए जिन्होंने अपनी मातृभाषा की परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये थे। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या लगभग साढ़े आठ हजार थी। साथ ही मातृभाषा पढ़ाने वाले लगभग तीन सौ शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद तथा तत्कालीन केंद्रीय संस्कृति राज्यमंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी इस अवसर पर उपस्थित थे।

भारतीय भाषा दिवस पर होने वाले आयोजनों में संभवतः यह सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण आयोजन था। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में अपनी भाषा के प्रति गौरव का भाव जाग्रत करना तो था ही साथ ही यह भी उद्देश्य था कि ये विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति, समाज, परंपरा तथा आस्था से और निकटता से जुड़ सकें।

भारतीय भाषा दिवस का आयोजन इसलिए प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारत अब विकास के एक नए दौर में प्रवेश कर रहा है जहां अपनी अस्मिता के प्रति गौरव भाव सफलता की सबसे बड़ी पूंजी है। हमें अपनी भाषाओं के संरक्षण और उन्नयन के लिए गंभीर होना होगा। हमें अपनी भाषाओं के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार तथा प्रयोग के लिए आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक श्रेष्ठ पहल मातृभाषा में शिक्षा की भी है। इसके लिए मातृभाषा में अध्ययन सामग्री का विकास भी महत्वपूर्ण है। इसके लिये अनुकूल वातावरण बनाना तथा ऐसे अध्येताओं को तैयार करना आवश्यक है जो स्तरीय गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री का लेखन विभिन्न भारतीय भाषाओं में कर सकें।

इस वर्ष इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी एक बार पुनः भारतीय भाषा दिवस का आयोजन 11 दिसंबर, 2024 को आंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में कर रहे हैं, जहां देश के शीर्ष विचारक, चिंतक तथा सार्वजनिक क्षेत्र में काम कर रहे प्रेरक व्यक्तित्वों से विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का साक्षात्कार होगा। यह आयोजन सिर्फ मैडल अथवा प्रमाणपत्र वितरित करने का आयोजन नहीं है। यह आयोजन विद्यार्थियों को प्रेरित करने तथा उनके उत्साह से प्रेरित होने का आयोजन है। यह आयोजन संकल्प करने का भी आयोजन है कि कैसे हम अपनी भाषाओं को न सिर्फ संरक्षित और संवर्द्धित करें बल्कि उनका प्रयोग कर स्वयं गौरवान्वित भी अनुभव करें।

**डॉ. सच्चिदानंद जोशी**
**सदस्य सचिव**
**इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र**
**नई दिल्ली**

# सुधाकर पाठक

*अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी*

## भारतीय भाषा उत्सव : बच्चों में मातृभाषा के साथ संस्कारों का हस्तांतरण

भारत एक बहुभाषी देश है, या कुछ यूं कहें कि भारत भाषाओं की सुंदर फुलवारी है। यहाँ 123 आधिकारिक भाषाएँ बोली जाती हैं। सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त 1600 से अधिक उपभाषाएँ और बोलियाँ हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि, व्याकरण, शब्द भण्डार और संरचना होती है, उसकी अपनी विशेष प्रकृति है। इसी तरह बोली की अपनी भिन्न मिठास है। भाषाओं के व्युत्पत्ति का इतिहास और विकास क्रम के साथ-साथ हर भाषा का अपना एक प्रभुत्व क्षेत्र है। प्रत्येक भाषा की अपनी समृद्ध साहित्य परम्परा और सांस्कृतिक विरासत है।

मानव सभ्यता के इतिहास में भाषाओं का जीवंत होना एक सामान्य घटना नहीं है। भाषाओं का निर्माण कारखानों में नहीं होता और न ही भाषाएँ पुस्तकों की मोहताज होतीं हैं। अभी भी कई ऐसी भाषाएँ हैं जिनकी अपनी लिपि भी नहीं है, किन्तु उस समाज में प्रचलित हैं। एक भाषा के निर्माण में सदियाँ लग जाती हैं। कई प्रक्रियाओं से गुजरते हुए, बनते-बिगड़ते हुए, संशोधित होते हुए, अनेक लोगों द्वारा प्रयुक्त होते हुए, समाज की जीवन शैली में घुलते-मिलते हुए, एक लम्बे अंतराल के बाद किसी भाषा को अपना एक मानक स्वरुप प्राप्त होता है। हमारे आसपास जितनी भी भाषाएँ इस समय प्रचलित हैं, उनके मानकीकरण के पीछे भी कई सदियों का अथक श्रम और निरंतर अभ्यास छिपा हुआ है।

भाषा मनुष्य की सर्वोत्तम खोज है। भाषा मनुष्य की जीवन शैली का एक अभिन्न अंग है। भाषा समाज को अपने साथ लेकर चलती है। समाज की जीवंतता भाषा के अस्तित्व पर टिकी होती है। समाज अनेक विचारों का संगठन है। विचारों के सम्प्रेषण के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। विचारों का सम्बन्ध हर उस तत्व के साथ है जो समाज को प्रभावित करता है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैचारिक और बौद्धिक तत्व ही समाज की गतिविधियों और योजनाओं को क्रियान्वित करते है। इन सभी तत्वों के बीच आपसी सम्बन्ध स्थापित करने, नीतियों के निर्माण करने और उसके प्रचार-प्रसार और स्थायित्व के लिए भाषा की भूमिका अतुलनीय है।

भाषा हमारे अवचेतन मन को सक्रिय करती है। भाषा ही हमारे आनुवांशिक संरचना (जेनेटिक कम्पोजिसन) का आधार होती है। हमारे मस्तिष्क में जिस भाषा में सूचनाएँ कोडिंग होती हैं, वो हमारी मातृभाषा में होती है। मातृभाषा ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। हमारी आनुवांशिक संरचना ने हमें इस तरह से तैयार किया होता है कि हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपने समाज और अपनी मिटटी को लेकर भावनात्मक रूप से बहुत गहरे जुड़े होते हैं। सूचना और तकनीक के इस युग में आज हम राष्ट्रवाद को लेकर जितने मुखर हैं, उसके पीछे भी भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा ही हमें समग्र राष्ट्र से जोड़ती है। कोई राष्ट्र भौगोलिक सीमाएँ तक ही सीमित नहीं होता, राष्ट्र के भीतर बहने वाली नदियाँ, झरने, पहाड़, हिमालय, वनस्पतियाँ, वन, जीव-जन्तु से लेकर धर्म, जाति, आस्था, विश्वास, पर्व, त्योहार, उत्सव, संस्कृति, स्थापात्य, कला-कृतियाँ, मठ-मन्दिर, भवन, संग्रहालय, पुस्तकालय, साहित्य, कला,

भाषा, शिक्षा आदि अवयवों का समष्टिगत रुप राष्ट्र है। राष्ट्र के समुन्नत विकास और उसकी सार्वभौमिक अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में भाषा ही नागरिकों के बीच परस्पर सामाजिक सौहार्द, भातृत्व, देशप्रेम और राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार करती है।

भाषा हमें गढ़ती है और संस्कारों से जोड़ती है। संस्कार के रुप में प्राप्त नैतिक मूल्य ही हमारी सोच, विचारधारा और सिद्धांतों का निर्माण करते हैं। किसी व्यक्ति की पहचान उसके संस्कार से होती है। हमारे संस्कार ही हमारे व्यक्तित्व का दर्पण होते हैं। भूमंडलीकरण और औद्योगिक क्रान्ति के इस युग में बच्चों को भारतीय ज्ञान, परंपरा, भाषा, संस्कृति और संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है। भाषाएँ हमारी सृजनशीलता, रचनात्मकता और मौलिकता की द्योतक हैं, तो संस्कार लोक व्यावहार का अंग है, जो समाज में व्यक्ति को संयमित, संतुलित और सम्यक रूप से जीवन निर्वाह करने के गुण सिखाता है। बच्चे देश के कर्णधार होते हैं। देश का भविष्य बच्चों के नन्हें हाथों में अंकुरित होता है। आने वाले समय में देश की स्थिति कैसी होगी ? देश की शिक्षा नीति, आर्थिक नीति, सामाजिक व्यवस्था, न्याय प्रणाली, सुरक्षा संसाधन, स्वास्थ्य सेवा जैसे विकास और निर्माण कार्यों की दशा और दिशा क्या होगी ? यह सभी बातें बच्चों को दिए जाने वाले संस्कारों पर निर्भर करती हैं। एक समृद्धशाली देश के निर्माण में बच्चों का संस्कारित होना अत्यावश्यक है। एक गौरवशाली और सशक्त देश की परिकल्पना में बचपन की अवहेलना नहीं की जा सकती। बचपन बहुत जल्दी बीत जाता है, किन्तु यह वो अमूल्य समय होता है जहाँ बच्चों के भविष्य की नींव रखी जाती है। बचपन आने वाले कल का द्वार खोलता है। बचपन में जो संस्कार बच्चा प्राप्त करता है, वही उसके सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। इस आयु वर्ग के बच्चों में ग्रहण करने और सीखने की असाधारण क्षमता होती है। अच्छे संस्कार में पला-बढ़ा बच्चा जीवन की विषम परिस्थितियों में भी सत्मार्ग और न्याय को ही चुनता है। भौतिक सुविधाओं को भोगने की लालसा से परे वो समाजोत्थान और देशभक्ति को समर्पित होता है भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन के लिए सर्वप्रथम हमें अंग्रेजी मानसिकता से बाहर आना होगा। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और सूचनाओं के संग्रहण के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, किन्तु इसे जीवन का अनिवार्य हिस्सा नहीं बनाना चाहिए। अंग्रेजी को लोकाचार और आपसी पत्र-व्यवहार का माध्यम नहीं बनाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर देती है। विश्व के सभी शिक्षाविदों और भाषाविदों के अनुसार मातृभाषा में शिक्षा देना शिक्षा का सबसे सुलभ और प्राकृतिक माध्यम है। मनुष्य की कल्पनाशीलता, रचनात्मकता और मौलिकता उसकी मातृभाषा में प्रतिबिम्बित होती है। मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना और उन्नति का आधार होती है। हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए और यही भाव आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करना चाहिए। जब हम मातृभाषा के लिए समर्पित होकर काम करेंगे तभी देश का उत्थान होगा। वर्तमान समय में देश में जिस तरह का सामाजिक और आर्थिक वातावरण पनप रहा है, वहाँ बच्चे मातृभाषाओं से दूर हो रहे हैं और युवा पीढ़ी अपनी मातृभाषा से विमुख हो रही है। उसके पीछे सबसे बड़ा कारण है मातृभाषाओं में रोजगार का आभाव होना। भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उन्नयन के लिए भारतीय भाषाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा से जोड़ना होगा। प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी, चिकित्सकीय और सभी अनुसंधान और शोध संस्थानों में मातृभाषा को बढ़ावा देना होगा। जब हम अपनी भाषा में गणित और विज्ञान की पढ़ाई करेंगे, शासन-प्रशासन की भाषा के रुप में मातृभाषा को प्राथमिकता देंगे और अपने जीवन में मातृभाषा को अपनाएंगे, तो भाषाओं का विकास स्वत होगा। आने वाले समय में उन्हीं देशों की भाषाएँ बची रहेंगी जो आर्थिक रुप से सम्पन्न और सूचना एवं प्राविधिक रुप से उन्नत होंगे। भविष्य की इन्हीं संभावनाओं को रेखांकित करते हुए हमें अपने देश को विश्व के श्रेष्ठतम स्थान पर पहुँचाने के लिए भारतीय भाषाओं का सम्मान करना होगा।

वर्ष 2022 में भारतीय भाषाओं के महत्त्व को समझते हुए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने 'भारतीय भाषा समिति' का गठन किया और उत्तर-दक्षिण के सेतु के नाम से प्रसिद्ध महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की जयंती (11 दिसम्बर ) को 'भारतीय भाषा दिवस' के रुप में मनाए जाने की घोषणा की। भारतीय भाषा दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य देश के भीतर अनेक भाषा-भाषी समुदायों के बीच परस्पर भाषाई सौहार्द को विकसित करना और छात्रों को अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए सहज वातावरण तैयार करना है। राष्ट्रीय एकता और सद्भाव को बढ़ाने तथा भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के उदेश्य से 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार' एवं 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली' के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के अवसर पर बुधवार, 11 दिसम्बर, 2024 को डॉक्टर अम्बेडकर अंतराष्ट्रीय केंद्र, जनपथ, दिल्ली में 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा घोषित 'भारतीय भाषा दिवस' का यह तीसरा संस्करण है। पिछले वर्ष तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में 'भारतीय भाषा उत्सव' का भव्य आयोजन किया गया था, जहाँ लगभग दस हज़ार लोगों की उपस्थिति थी। इस विहंगम सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम नाथ कोविन्द तथा विशिष्ट अतिथि के रुप में तत्कालीन केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी की गरिमामयी उपस्थिति थी।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी पिछले आठ वर्षों से बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्रों और उनके भाषा शिक्षकों को सम्मानित करती आ रही है। इस सम्मान समारोह में भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', शत प्रतिशत (100%) अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' एवं उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। अकादमी के इस महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार और उन्नयन करना है। प्रत्येक आयोजन में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों की संख्या में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। अब तक के आयोजन में इस सम्मान समारोह ने शैक्षिक, साहित्यिक एवं अकादमिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। इन आयोजनों से अपनी मातृभाषा को लेकर समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इस तरह के आयोजन से छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों का मनोबल बढ़ता है। वहीं इन भव्य समारोहों में सम्मानित होकर छात्र एवं शिक्षक अपनी भाषा को लेकर गौरवान्वित होते हैं।

इस वर्ष भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर 305 विद्यालयों के 7125 मेधावी छात्रों को 'भाषादूत सम्मान', 303 छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' तथा 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 846 शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। ये सभी सम्मान विभिन्न मंत्रालयों के माननीय मंत्रियों, देश के विख्यात साहित्यकारों, पत्रकारों, विद्वानों, भाषाविदों, शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों एवं भाषा सेवियों की उपस्थिति में दिए जाएँगे। देश के सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्रों, शिक्षकों, भाषाविदों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों, पत्रकारों, साहित्यकारों, प्रशासनिक सेवा अधिकारियों, भाषा सेवियों सहित समस्त देशवासियों को भारतीय भाषा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!
आइए, इस भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर आयोजित 'भारतीय भाषा उत्सव' पर हम जिम्मेदार नागरिक और अभिभावक होने के नाते बच्चों को अपनी मातृभाषा से जोड़ने के साथ-साथ बच्चों में संस्कारों का हस्तांतरण करने का प्रण लें। इति शुभम्।

**सुधाकर पाठक**
**अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी**

# इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

## - एक परिचय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (इं.गां.रा.क. केन्द्र) की स्थापना संस्कृति मंत्रालय के तहत भारत सरकार द्वारा एक स्वायत्त न्यास के रुप में की गई थी, जिसका उद्देश्य संस्कृति के विशिष्ट क्षेत्र में भारतीय कला और सांस्कृतिक धरोहर का दस्तावेजीकरण, संरक्षण, संरक्षण और प्रसार करना और सक्षम व्यवसायिकों को प्रशिक्षित करना था। केन्द्र की परिकल्पना संवाद, रचनात्मक सांस्कृतिक गतिविधियों, अनुसंधान कार्यक्रमों, प्रकाशनों, प्रशिक्षण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक कायाकल्प के रुप में की गई है। इसका उद्देश्य कला और संस्कृति के वैश्विक भंडार के रुप में खुद को स्थापित करना और कला सामग्री के लिए एक प्रमुख संसाधन केंद्र के रुप में कार्य करना है। चाहे वह साहित्यिक रुप में हो या श्रव्य दृश्य रुप में।

इसके गठन को मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने संकल्प संख्या एफ 16/18 एआरटीएस, दिनांक 19 मार्च 1987 द्वारा अधिसूचित किया गया था। 24 मार्च 1987 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत नई दिल्ली में पंजीकृत और गठित किया गया ।

कला और संस्कृति के क्षेत्र में सुचारु रुप से काम करने और लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए, इं.गां.रा.क. केन्द्र में एक न्यासी बोर्ड है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ और संस्कृति मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल हैं। इसके अलावा, संगठन को सलाह देने के लिए इं.गां.रा.क.केन्द्र की एक कार्यकारी समिति भी मौजूद है। श्री राम बहादुर राय इं.गां.रा.क. केन्द्र के अध्यक्ष और प्रोफेसर सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव हैं।

**केंद्र के मुख्य उद्देश्य हैं -**

- कला, विशेष रुप से लिखित, मौखिक और दृश्य सामग्री के लिए एक प्रमुख संसाधन केंद्र के रुप में कार्य करना।
- संदर्भ कार्यों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों, कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर पर मौलिक ग्रंथों के अनुसंधान और प्रकाशन कार्यक्रम शुरु करना।
- आदिवासी और लोक कलाओं का अध्ययन करना और इस क्षेत्र में व्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन को बढ़ावा देने और सुगम बनाने के लिए संदर्भ सामग्री प्रकाशित करना।
- पारंपरिक और समकालीन कला पर प्रदर्शन, प्रदर्शनियों, मल्टीमीडिया अनुमानों, सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं के माध्यम से रचनात्मक और महत्वपूर्ण संवाद के लिए एक मंच प्रदान करना।
- आधुनिक विज्ञान और कला एवं संस्कृति के बीच अंतर को पाटने की दृष्टि से कला और दर्शन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बीच संवाद को बढ़ावा देना।

- भारतीय लोकाचार से संबंधित कला, मानविकी और संस्कृति में अनुसंधान करना।
- विविध सामाजिक संवर्गों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच परस्पर संपर्क के जटिल ताने-बाने में मौजूद रचनात्मक एवं परिवर्तनात्मक घटकों पर प्रकाश डालना।
- भारत और अन्य देशों के मध्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के बारे में जागरुकता को बढ़ावा देना।

### केन्द्र का विज़न-

जैसे-जैसे देश विकसित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, भारत की कला, संस्कृति और धरोहर क्षेत्रों में भी देश की जीडीपी में उच्च योगदान सेऔर अधिक संगठित रचनात्मक अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है। इस पृष्ठभूमि के त, इ.गा.रा.क.केन्द्र अपने दृष्टिकोण को निम्नानुसार संकल्पित और परिवर्तित करता है:-

1. ई.गां.रा.क. केन्द्र को देश में सांस्कृतिक कायाकल्प का केंद्र बनाना।

2. इसे सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद और बोध का केंद्र बनाना।

3. इसे दक्षिण एशियाई सांस्कृतिक धरोहर के लिए ज्ञान और अनुसंधान का केंद्र बनाना।

4. इसे भारतीय प्रवासियों की सांस्कृतिक धरोहर के अध्ययन की दृष्टि से शिक्षा का केंद्र बनाना।

5. इसे विभिन्न कला रुपों, परंपरा, धरोहर के अभिसरण का केंद्र बनाना।

6. इसे एक ऐसे केन्द्र के रुप में तैयार करना जहाँ परंपरा का मेल आधुनिकता से, शास्त्रीय कलाओं का मेल लोक कलाओं से और कलाओं का मेल विज्ञान से, लोकाचार का मेल अभिव्यक्ति से और परंपरा का मेल नवाचार से हो।

### प्रमुख प्रभाग एवं उनके कार्य :

**इं.गां.रा.क.केन्द्र की निम्नलिखित प्रमुख कार्यात्मक इकाइयाँ हैं:**

शैक्षणिक इकाई शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का सुचारु संचालन सुनिश्चित करता है। केन्द्र में निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं:-

I. सांस्कृतिक सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

II. निवारक संरक्षण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

III. बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

IV. डिजिटल लाइब्रेरी और डेटा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

V. पाण्डुलिपि और पुरालेख में आातकोत्तर डिप्लोमा।

VI. दक्षिण पूर्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अग्रेय) एशियाई अध्ययन (नया पाठ्यक्रम)।

VII. सांस्कृतिक प्रबंधन में नातकोतर डिप्लोमा (नया पाठ्यक्रम)।

**इसके अतिरिक्त इं.गां.रा.क. केन्द्र में कुछ अल्प अवधि प्रमाण-पत्र कोर्स (शॉर्ट टर्म सर्टिफिकेट कोर्स) भी चलाए जा रहे हैं। इसके साथ निम्नलिखित क्षेत्रीय केंद्रों में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरु किया है।**

- क्षेत्रीय केंद्र बेंगलुरुः पांडुलिपि विज्ञान और पुरालेख में पी.जी. डिप्लोमा।
- क्षेत्रीय केंद्र रांची: जनजातीय कला और शिल्प में पी.जी. डिप्लोमा।
- आदि दृश्य (शैलकला)- प्रागैतिहासिक सैल कला के अध्ययन के लिए समर्पित
- संरक्षण प्रयोगशाला - निवारक संरक्षण, संरक्षण प्रशिक्षण, पुस्तकों, पांडुलिपियों, वित्रों और वस्तुओं (धातु, लकड़ी की वस्तुएं, नृवंशविज्ञान वस्तुएं, आदि) के संरक्षण के क्षेत्रों में विशेषज्ञता।
- सांस्कृतिक सूचना विज्ञान - जो सांस्कृतिक संरक्षण और प्रसार के लिए प्रौद्योगिकी उपकरण लागू करता है
- जनपद सम्पदा - जीवनशैली अध्ययन में संलग्न है।
- कलादर्शन - कार्यकारी इकाई जो इं.गां.रा.क.केन्द्र में सृजित शोध और अध्ययनों को प्रदर्शनियों के माध्यम से दृश्य रुपों में बदल देती है।
- कलाकोश - मुख्य रुप से भारतीय भाषाओं में मौलिक ग्रंथों के अध्ययन और प्रकाशन के लिए समर्पित
- कलानिधि - बहु-रुप पुस्तकालय
- मीडिया केन्द्रः मीडिया केन्द्र श्रव्य दृश्य शोध प्रलेखन करने और उन्हें समृद्ध करने के लिए संग्रह करने और दुनिया भर में प्रचार-प्रसार करने का प्रयास कर रहा है।
- राष्ट्रीय साँस्कृतिक दृश्य-श्रव्य अभिलेखागार (एनसीएए) राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृश्य-श्रव्य अभिलेखागार का उद्देश्य भारत की मौखिक परंपराओं, प्रदर्शन कलाओं, पारम्परिक और सांस्कृतिक प्रथाओं और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों तक दृस्य-श्रव्य रुप में दीर्घकालिक पहुंच सुनिश्चित करना है।
- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन - रा.पा.मि. देश एवं विदेश की पाण्डुलिपियों का दस्तावेजीकरण, सूचीकरण, संरक्षण एवं जागरुकता प्रदान करने का कार्य करता है।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (एनएमसीएम) - मिशन सचिवालय, एनएमसीएम ने कला रुपों, कलाकारों, गुमनाम नायकों और गांवों के सांस्कृतिक मानचित्रण पर डेटा संग्रह के लिए पहले से ही मानक प्रारुप और टेम्पलेट विकसित किए हैं। प्रारुप अंग्रेजी और हिंदी दोनों में उपलब्ध है। निम्नलिखित प्रारुप तैयार किये गये हैं:

- भारत के गाँव का सांस्कृतिक मानचित्रण, कला और शिल्प का दस्तावेज़ीकरण, कलाकारों और कारीगरों का दस्तावेज़ीकरण, प्रसिद्ध हस्तियों और गुमनाम नायकों का दस्तावेज़ीकरण। इन्हें सीएससी के साथ साझा किया गया है।

- आत्म निर्भर भारत सेन्टर फॉर डिजाइन (एबीसीडी) भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत स्थापित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत के स्वदेशी कारीगरों को सशक्त बनाने और उनकी कलाकृतियों को अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान स्थापित करने के उद्देश्य से आत्मनिर्भर भारत सेन्टर फॉर डिजाइन की स्थापना की है।

- वैदिक धरोहर पोर्टल - एक अनूठी पहल जिस वेबसाइट पर केन्द्र द्वारा अपने वैदिक धरोहर की संपूर्ण जानकारी प्रेषित की जाती है। वैदिक हेरिटेज पोर्टल पर होस्टिंग के लिए वेब सक्षम गैलरी बनाई जा रही है।

- मौसम परियोजना - मौसम समुद्री मार्ग और सांस्कृतिक परिदृश्य की अनुठी और गहन पहल ताकि यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में एक अंतराष्ट्रीय मिश्रित मार्ग (प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर सहित) का प्रदर्शन किया जा सके।

- सूत्रधार - प्रशासनिक अनुभाग जो आधारभूत इकाई के रुप में कार्य करता है और सभी गतिविधियों का समन्वय करता है।

- इ.गां.रा.क. केन्द्र में कलाकारों और मेहमानों के लिए सुविधा पूर्वक रहने के लिए कला-निलयम नामक एक गेस्ट हाउस भी है।

इसके अतिरिक्त इं.गां.रा.क. केन्द्र द्वारा नये संसद की इमारत के कलात्मक कार्यों की सम्पूर्ण परिकल्पना को साकार रुप देने का कार्य संपत्र किया गया।

जी-20 समिट के दौरान मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी एग्जीबिशन का सृजन केन्द्र द्वारा आईटीपीओ हॉल में किया गया। जिसमें भारत की लोकतांत्रिक परम्पराओं की सोलह (16) विभित्र भाषाओं को श्रृव्य-दृश्य रुप में दर्शाया गया। जी-20 सम्मेलन को दौरान इं.गां. रा.क. केन्द्र द्वारा विश्व की सबसे ऊंची अष्ट धातु से बनी नटराज की मूर्ति की परिकल्पना एवं निर्माण करवा कर भारत मण्डपम के परिसर में स्थापित करवाया गया ।

**इं.गां.रा.क. केन्द्र अपने 9 क्षेत्रीय केंद्र भी संचालित करता है जो शोध के विशिष्ट क्षेत्रों में विशेष केंद्र हैं जैसा कि नीचे बताया गया है:**

<u>क्षेत्रीय केन्द्र एवं उनके विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र:</u>

| | | |
|---|---|---|
| वाराणसी | : | अगम दर्शन |
| गुवाहाटी | : | उत्तर पूर्व संस्कृति केंद्र |
| बेंगलुरु | : | सभ्यता और प्रदर्शन कला |
| रांची | : | जनजातीय धरोहर अध्ययन |
| वडोदरा | : | आधुनिक कला |
| गोवा | : | अंतर सांस्कृतिक संबंध |
| त्रिशूर | : | वैदिक परम्परा और प्रदर्शन अध्ययन |
| पुडुचेरी | : | पुरातत्व और पुरालेख अध्ययन |
| जम्मू-कश्मीर | : | शिव दर्शन |

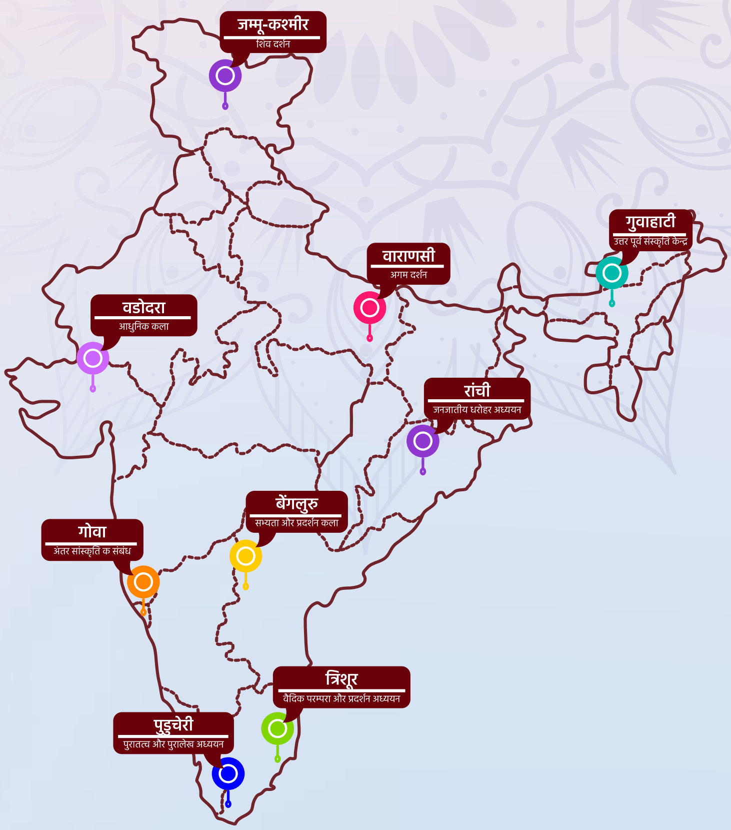

# हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी - एक परिचय

*'पत्तों पर पानी डालने से नहीं, जड़ों को सींचने से बढ़ेंगी हमारी भाषाएँ ।'*

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित एक स्ववित्तपोषित संस्था है। हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं, उपभाषाओं एवं क्षेत्रीय बोलियों के संरक्षण और उन्नयन के उद्देश्य से वर्ष 2015 में अकादमी की स्थापना की गई। अकादमी अपने स्थापना काल से ही विभिन्न माध्यमों से भाषा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती आ रही है। 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' के नाम से अकादमी की एक त्रैमासिक पत्रिका है जो विशुद्ध रुप से भाषा पर केन्द्रित सामग्रियों का प्रकाशन करती है। श्री सुधाकर पाठक हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष हैं। अकादमी का आदर्श वाक्य है निजभाषोन्नती राष्ट्रोन्नतिः। दिल्ली स्थित हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी शिक्षा, साहित्य और भाषा के क्षेत्र में एक स्थापित नाम है। अकादमी विशेषरुप से दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं आचार्यों के लिए भाषा पर केन्द्रित कार्यशालाएँ, राष्ट्रीय संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। अपनी भाषाओं के प्रति सम्मान के भाव को बढ़ाने और भारतीय भाषाओं की वस्तुस्थिति से अवगत कराने के साथ-साथ अकादमी विभिन्न सम्मान योजनाओं को भी क्रियान्वित करती है।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार को समर्पित एक स्ववित्तपोषित संस्था है। किसी सम्प्रभु संपन्न राष्ट्र के पाँच प्रमुख अंगों में से भाषा एक महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील अंग है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान अथवा अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का माध्यम भर नहीं होती बल्कि किसी राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ी राष्ट्रीय सम्पदा होती है। देश की पुरातन परम्पराओं, रीति-रिवाजों, सनातन संस्कृतियों, धार्मिक अभ्यासों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण करने का जो सुलभ माध्यम है, वो भाषा ही है। इसीलिए भाषा को संस्कृति की संवाहिका भी कहा जाता है। हमारी भाषा और संस्कृति ही हमें विश्व में अलग पहचान देती है। हमारी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, भौगोलिक एवं सामाजिक संरचना, प्राचीन दस्तावेज, धार्मिक आचरण, राजनीतिक विचारधारा, साहित्य एवं लोक कलाएँ आदि भाषा के द्वारा ही सुरक्षित और संरक्षित है। हमारे दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को सहज बनाने में भाषा की भूमिका अतुलनीय है।

इतना महत्त्वपूर्ण और गंभीर विषय होने के बावजूद भी भाषा आम जनमानस को उद्वेलित नहीं करती। भाषा उनके लिए केवल दैनिक प्रयोजन का एक साधन भर है। उनकी प्राथमिकता रोटी, कपड़ा और मकान जैसे जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं तक सीमित है। उन्हें अपनी दैनिक जीवन की आम बोलचाल की भाषा से कोई सरोकार नहीं है। दूसरी ओर देश का विद्वान और प्रबुद्ध वर्ग भी अपनी भाषा के प्रति सचेत और जागरुक नहीं है। देश का शिक्षित वर्ग केवल साहित्यिक आयोजनों और साहित्यिक विमर्शों तक सीमित है। वे इस भ्रम हैं कि साहित्यिक सेवा ही भाषा सेवा है। यह सत्य है कि साहित्य भाषा का एक प्रमुख अंग है, किन्तु साहित्यिक सेवा और भाषा सेवा दोनों की अवधारणा भिन्न है। देश में इस समय कई साहित्यिक संस्थाएं काम कर रहीं हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन भी हो रहा है। साहित्य तो फल-फूल रहा है, किन्तु विगत में भाषा की जो स्थिति थी, उसमें कोई सुधार नहीं हुआ है बल्कि हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के सामने और ज्यादा चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं ने भारतीय भाषाओं पर अपना वर्चस्व स्थापित कर रखा है। प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी को अनिवार्य विषय तथा माध्यमिक स्तर के बाद हिन्दी को फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश आदि विदेशी भाषाओं के समकक्ष वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। उससे हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का पथ बाधित हुआ है। प्रारंभिक शिक्षा से ही हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं का पठन-पाठन रुक जाएगा तो भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार कैसे होगा? विदेशी भाषाओं की चकाचौंध में शिक्षक, अभिभावक एवं छात्र वर्ग भारतीय भाषाओं

को हेय की दृष्टि से देखते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान को इस तरह से प्रभावित किया जा रहा है कि अंग्रेजी आना ही शिक्षित होना है। जिसे अंग्रेजी का ज्ञान होगा रोजगार का हकदार भी वही होगा। जब अंग्रेजी को रोजगार की प्रमुख भाषा बना दिया गया है तो हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को कोई क्यों पढ़ेगा? शिक्षा और सभी शैक्षणिक विभाग अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं को प्राथमिकता देते है। निजी क्षेत्रों में रोजगार के लिए अंग्रेजी का आना अनिवार्य है। समाज भी अंग्रेजी भाषा को प्रतिष्ठा एवं सम्मान की भाषा के रूप में देखता है। जब सारी व्यवस्था ही हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के विपक्ष में है तो भारतीय भाषाओं का उत्थान कैसे संभव होगा? हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की दुर्दशा से उपजी इस पीड़ा ने ही हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' को जन्म दिया। हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से वर्ष 2015 में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी का गठन किया गया।

अपने स्थापना वर्ष से ही अकादमी देश में स्थापित समकालीन संस्थाओं से अलग क्षेत्र में कार्य कर रही है। इस समय बहुत-सी संस्थाएं निजी स्तर पर तथा सरकारी अनुदान पर साहित्यिक कार्यों एवं आयोजनों में सक्रिय हैं। दिन-प्रतिदिन नई-नई साहित्यिक संस्थाओं का गठन और साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। हमने अपने स्तर पर अध्ययन करते हुए पाया कि इन साहित्यिक मेलों में पुस्तक प्रदर्शनी और भाषा पर केन्द्रित आयोजनों में भी सक्रिय है। विभिन्न अवसरों पर भाषा पर संगोष्ठियों, परिचर्चाओं, समारोहों का आयोजन करती आ रही है। विशुद्ध रूप से हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं पर केन्द्रित हिन्दुस्तानी भाषा भारती' त्रैमासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन भी कर रही हैं। देश के प्रतिष्ठित एवं सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों एवं परिचर्चाओं का आयोजन कर रही है। स्तरीय साहित्यिक एवं भाषाई पुस्तकों का भी प्रकाशन कर रही हैं। विद्यालयी स्तर पर भारतीय भाषाओं के संरक्षण के अभियान को गति देने के उद्देश्य से 5 फरवरी, 2018 को अकादमी ने भारतीय भाषाओं के शिक्षकों के लिए एक शिक्षक प्रकोष्ठ का गठन किया। भारतीय भाषाओं के इस शिक्षक प्रकोष्ठ में 800 से अधिक भाषा शिक्षक जुड़े हुए हैं। इस समय दिल्ली, गाजियाबाद और गुरुग्राम में शिक्षक प्रकोष्ठ सक्रिय रुप से कार्य कर रहा है। शिक्षकों के भाषिक चेत और लेखकीय समझ को विकसित करने के लिए अकादमी शिक्षकों के लिए कार्यशालाएं आयोजित करती है। हाल ही में शिक्षक प्रकोष्ठ के शिक्षकों के पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के पाठक ही नहीं हैं। केवल लेखक एवं साहित्यकार ही अपनी-अपनी पुस्तकों को पढ़ रहे हैं या उपहारस्वरुप एक-दूसरे को भेंट कर रहे हैं। इतनी मेहनत से वर्षों की साधना से लिखी गई हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य को पढ़ने वाले पाठक ही नहीं है तो ऐसे साहित्य को रचने का क्या औचित्य है? पुस्तकें केवल पुस्तकालय या घर की अलमारी में सजावट की वस्तु बन कर रह गई हैं। युवा वर्ग विदेशी साहित्य में मग्न हैं और उसको खरीदकर पढ़ रहा है। विभिन्न पुस्तक मेलों में हिन्दी साहित्य को खरीदकर पढ़ने वाले पाठक वर्ग की संख्या नगण्य है। बड़ी संख्या में साहित्यिक संस्थाओं के होने के बावजूद भी जब हिन्दी साहित्य को पढ़ने वाले पाठक वर्ग का न मिलना चिंता का विषय है।

विगत कई वर्षों से 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी अपने सीमित संसाधनों के द्वारा जमीनी स्तर पर भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य कर रही है। अकादमी साहित्य, कला, शिक्षा और भाषा के क्षेत्र में सतत रूप से सक्रिय है। अकादमी अपने वार्षिक आयोजनों जैसे 'काव्य प्रतिभा खोज', 'काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं निःशुल्क पुस्तक प्रकाशन, हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान' आदि के माध्यम से साहित्यिक क्षेत्र में भी सक्रिय है। पुस्तक शोधपरक लेखों का संग्रह,' प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौतियाँ नाम से अकादमी ने एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है, इसके साथ ही महत्वपूर्ण पुस्तकों भाषा-गत-अनागत', हिन्दी: विमर्श के विविध आयाम और भारतीय भाषाएँ: चिंता से चिंतन तक का प्रकाशन भी किया गया है। मेधावी छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह' एवं 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह के माध्यम से अकादमी 10 वीं कक्षा के हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों एवं भाषा शिक्षकों तथा विद्यालयों को सम्मानित करती आ रही हैं। शिक्षकों एवं छात्रों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से विद्यालयों में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के लिए वातावरण का निर्माण कर रही हैं। देश के प्रबुद्ध साहित्यकारों, लेखकों, पत्रकारों, मीडिया कर्मियों, प्रशासनिक सेवा अधिकारियों, सरकारी उच्चाधिकारियों के भाषा पर केन्द्रित साक्षात्कारों के माध्यम से पाठकों को निज भाषा के महत्त्व एवं उसकी चुनौतियों से अवगत करा रही हैं। भारत स्थित विदेशी दूतावासों के राजदूतों एवं राजनयिकों से शिष्टाचार भेंट करके भाषा और संस्कृति के माध्यम से दो मित्र राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने का कार्य कर रही हैं। कोरोना काल की तालाबंदी की अवधि में भी

अकादमी भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए सक्रिय रूप से कार्य करती रही है। विभिन्न वेबिनारों एवं डिजिटल माध्यमों से शिक्षा, कला और भाषा पर केन्द्रित संगोष्ठियों, परिचर्चाओं के आयोजनों में अकादमी की सक्रिय भूमिका रही है। इन सभी आयोजनों, सम्मान समारोहों, कार्यशालाओं एवं निःशुल्क पुस्तक प्रकाशन योजना के लिए अकादमी प्रतिभागियों, शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों से कोई शुल्क नहीं लेती है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए भी अकादमी को किसी भी सरकारी संस्थाओं से कोई सहयोग या अनुदान प्राप्त नहीं होता है। इन सभी खर्चों का वहन अकादमी अपने सीमित संसाधनों से करती आ रही है। इस तरह समग्र में देखा जाए तो हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी एक स्ववित्तपोषित' निजी संस्था के रूप में समकालीन अन्य संस्थाओं से पृथक कार्य कर रही है। भारतीय भाषाओं और प्रचार-प्रसार करना ही 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' का मुख्य उद्देश्य और दृढ़ संकल्प है।

हिन्दुस्तानी भाषा भारती', हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की एक त्रैमासिक पत्रिका है। हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका विशुद्ध हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समर्पित पत्रिका है, जिसमें साहित्य की प्रचलित विविध विधाओं जैसे गीत, कविता, कथा, उपन्यास, व्यंग्य, संस्मरण, नाटक, यात्रा वृत्तान्त, एकांकी आदि को सम्मिलित न करके केवल हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति, साहित्य, संस्कृति एवं लोक कलाओं से सम्बन्धित सारगर्भित लेख/आलेख एवं शोध सामग्रियों का ही प्रकाशन किया जाता है। प्रत्येक अंक में किसी एक भारतीय भाषा को विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है जिन्हें पत्रिका के स्थायी स्तम्भ चमत्कार लोक भाषाओं का' के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। अब तक बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, कुमाऊंनी, भोजपुरी, पंजाबी, अवधी, नेपाली, मैथिली, डोगरी, संस्कृत, पूर्वोत्तर की भाषाएँ, संथाली, तमिल, कश्मीरी, मालवी, बघेली, हरियाणवी, बंगाली, कोंकड़ी, पवारी, तेलुगु एवं गुजराती भाषाओं के विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। पत्रिका के महत्त्वपूर्ण स्थायी स्तम्भ साक्षात्कार के अंतर्गत विभिन्न सरकारी पदों पर बैठे हुए उच्चाधिकारियों, विद्वानों, भाषाविदों, शिक्षाविदों, प्रतिष्ठित साहित्यकारों, दिल्ली स्थित मित्र देशों के दूतावासों के राजनयिकों एवं राजदूतों के साक्षात्कारों को प्रकाशित किया जाता है। इन साक्षत्कारों की आधार भूमि केवल भाषा और संस्कृति पर ही केन्द्रित होती है। भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में युवाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने तथा भारतीय भाषाओं के प्रति उनके पठन संस्कृति और जिज्ञासु प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए पत्रिका के नवीन अंक से 'युवा मत' स्तम्भ का शुभारम्भ किया गया है। 'युवा मत' स्तम्भ देश के विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत युवा लेखकों, शोधार्थियों, पत्रकारों, मीडियाकर्मियों के निज भाषा के प्रति उनके दृष्टिकोण, विचार, संवेदना, भाषिक चेतना, लेखकीय समझ और बौद्धिक स्तर को जानने-समझने का एक माध्यम है। इस नवीन स्तम्भ का उद्देश्य हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं पर युवाओं के विचारों एवं भावनाओं को अधिक से अधिक पाठकों, मुख्यधारा के साहित्यकारों, भाषाविदों, शिक्षाविदों एवं नीति-निर्माताओं तक पहुँचाना है।

# डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार : एक परिचय

सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का योगदान बहुत बड़ा है और वे आधुनिक भारत के प्रमुख संस्थापकों में से एक थे। वर्ष 2015 में डॉ. अंबेडकर की 125वीं जयंती के समारोह के लिए मार्गदर्शन, सलाह और दिशा प्रदान करने के लिए एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया था । 30 मई, 2015 को माननीय प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में 15, जनपथ, नई दिल्ली में डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना करने का निर्णय लिया गया। डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की आधारशिला 20 अप्रैल, 2015 में और उद्घाटन 7 दिसंबर, 2017 को माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया था और उन्होंने डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र को सामाजिक आर्थिक परिवर्तन और बौद्ध अध्ययन के क्षेत्र में अध्ययन, अनुसंधान, विश्लेषण और नीति निर्माण के लिए उत्कृष्टता केंद्र बनाने की घोषणा की।

डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में तीन सभागार और तीन सम्मेलन कक्ष हैं जो विभिन्न मंत्रालयों, पीएसयू, भारत सरकार के स्वायत्त निकायों, गैर सरकारी संगठनों और निजी संगठनों के सेमिनार/आधिकारिक कार्यक्रम के लिए बुक किये जाते हैं । डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में एक शानदार पुस्तकालय है जो समाज के सभी वर्गों के लिए निःशुल्क उपलब्ध है जो पाठकों के बीच में बहुत लोकप्रिय है।

Website: https://daic.gov.in/

डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय स्मारक, 26 अलीपुर रोड, दिल्ली-110054 पर स्थित बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जी से संबंधित महत्वपूर्ण स्थान है जिसका उद्घाटन 13 अप्रैल, 2018 को भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया था। यह स्मारक "पंचतीर्थ" में से एक है जिसे भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा "महापरिनिर्वाण भूमि" नाम दिया गया है क्योंकि 6 दिसंबर, 1956 को बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने यहाँ अंतिम सांस ली थी।

डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय स्मारक वास्तुकला डिजाइन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि यह भारत में पहली खुली किताब के आकार की इमारत है। स्मारक के मुख्य भवन का आकार भारत के संविधान, शिक्षा और ज्ञान के माध्यम से सशक्तिकरण का प्रतीक है। इस खूबसूरत इमारत में एक बेहतरीन संग्रहालय, एक ध्यान कक्ष, संगीतमय फव्वारे, अशोक स्तंभ, सांची स्तूप के द्वारों के समान दो तोरण द्वार, एक प्रतिमा और भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की 12 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा है। स्मारक का समग्र वातावरण आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक बौद्ध वास्तुकला का एक आदर्श मिश्रण है। DANM डॉ. बी. आर. अंबेडकर पर सूचना और कलाकृतियों का एक भंडार है।

`हर साल 14 अप्रैल को बाबा साहब डॉ. बी.आर. अंबेडकर की जयंती और 6 दिसंबर को महापरिनिर्वाण दिवस पर देश भर से लोग और समूह उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए स्मारक पर आते हैं।

**(कर्नल आकाश पाटील)**
**निदेशक**

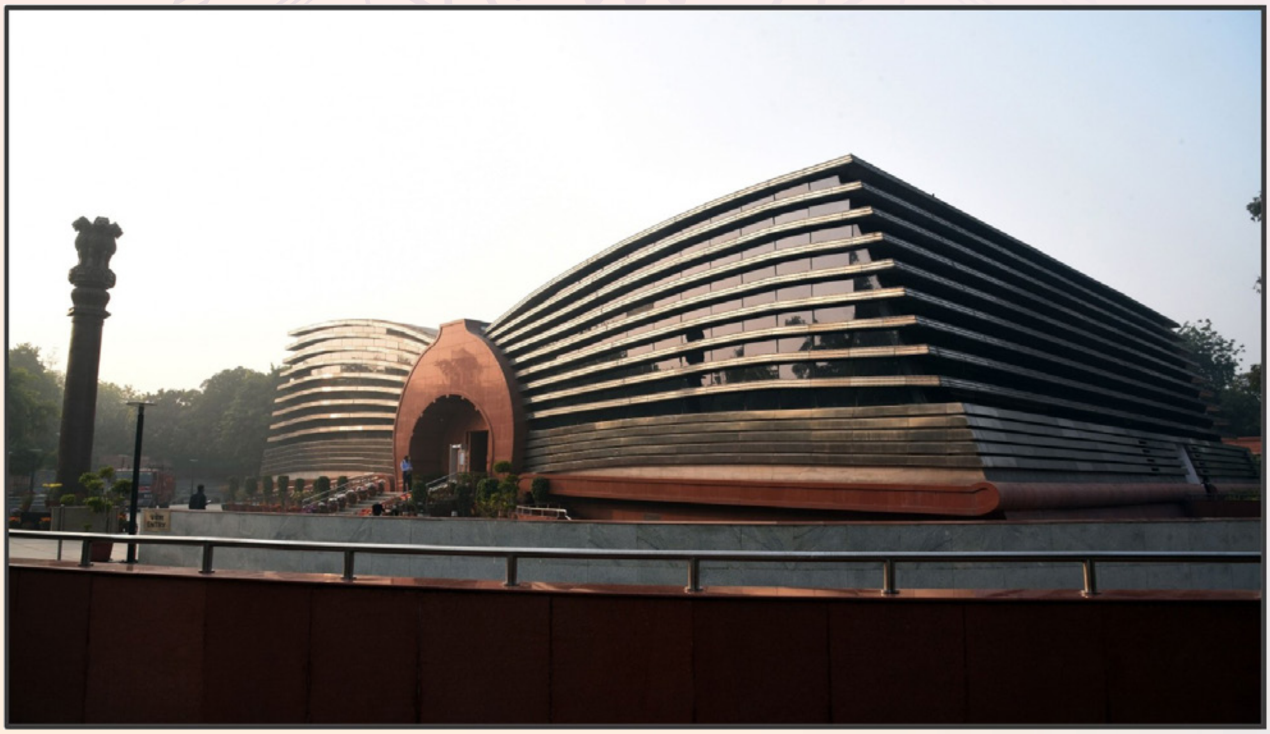

# भारतीय भाषाओं के उन्नयन में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की सहयात्रा की झलक

एक नदी के अस्तित्व में आने में अनंत जल श्रोतों का योगदान होता है। जल के निर्माण में करोड़ों बूंदों का समिश्रण जुड़ा होता है। कोई भी कार्य पर्दे के सामने जितना रोमांचक, आकर्षक और प्रभावशाली लगता है, उसके पीछे अनेकों छोटे-छोटे प्रयासों का प्रतिफल जुड़ा होता है। कोई भी बड़ा कार्य बड़ी सोच से ही सम्भव हो पाता है। अपने उद्देश्यों, गतिविधियों एवं योजनाओं को बृहत रुप में विस्तार देने के क्रम में 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' के गिलहरी प्रयासों को जब सहेजने का विचार आया तो अनेक पटकथाएँ सामने आने लगीं। इस लम्बी यात्रा में 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र', संस्कृति मंत्रालय जैसे प्रतिष्ठित संस्था का सहयोग और विशेष रुप से डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी जैसे कर्मठ, उद्देश्यों के प्रति गम्भीर और संवेदनशील व्यक्तित्व का मार्गदर्शन और सहयोग मिलना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में कला केन्द्र के विशाल प्रांगण और सभागार में कई भव्य और महत्त्वपूर्ण आयोजन सम्पन्न हुए हैं।

20 मई, 2018 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभागार में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'राष्ट्र निर्माण में हिन्दी की भूमिका' का आयोजन किया गया था। हिन्दी के विविध आयामों को समेटे हुए इस संगोष्ठी को चार सत्रों में विभाजित किया गया था जिसमें देश के ख्यातिलब्ध वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता के रुप में प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, श्री अतुल कोठारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली, श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार, सुश्री निधि कुलपति, एन. डी. टी. वी., प्रो. अवनीश कुमार, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, श्री सुधीश पचौरी, सुविख्यात पत्रकार, डॉ प्रमोद तिवारी, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रो. नंद किशोर पांडेय, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, प्रो. राम मोहन पाठक, हिन्दी सेवी, डॉ. अशोक चक्रधर, हिन्दी के विद्वान, कवि, लेखक, निर्देशक, अभिनेता, नाटककर्मी, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार और हिन्दी सेवी, श्री अच्युतानंद मिश्र, पत्रकार एवं पूर्व कुलपति, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रिकारिता विश्वविद्यालय, श्रीमती चित्रा मुदगल, वरिष्ठ साहित्यकार, पद्मश्री डॉ. नरेंद्र कोहली, सुविख्यात लेखक, श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्यकार एवं पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी की गरिमामयी उपस्थिति थी। समारोह का स्वागत वक्तव्य डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा दिया गया था। इस अवसर पर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के शिक्षक प्रकोष्ठ की स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया था। इस समय शिक्षक प्रकोष्ठ में 9 भारतीय भाषाओं के 800 से भी अधिक शिक्षक जुड़े हुए हैं। संगोष्ठी में प्रस्तुत वक्ताओं के वक्तव्यों को बाद में पुस्तक रूप में 'राष्ट्र निर्माण में हिन्दी की भूमिका' के नाम से प्रकाशित भी किया गया, जिसका लोकार्पण 3 फरवरी, 2019 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रांगण में आयोजित हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन 'मेधावी छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह' में किया गया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से इस अदभुत और अद्वितीय आयोजन में दिल्ली प्रदेश के लगभग 150 विद्यालयों के 1725 छात्रों सहित उनके हिन्दी शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में हिन्दी विषय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 32 मेधावी छात्रों को 'भाषा प्रहरी सम्मान-2018' से अलंकृत किया गया। जिन बच्चों ने 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये थे उन्हें 'भाषा दूत सम्मान -2018' से नवाजा गया साथ ही उनके हिन्दी शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में किसी एक विद्यालय के सर्वाधिक (109) विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर 'बाल भारती पब्लिक स्कूल', पीतमपुरा दिल्ली को 'भाषा रत्न सम्मान-2018' से सम्मानित किया गया था।

गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में स्थित उमंग सभागार में 23 फरवरी, 2024 को 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा उत्सव' का आयोजन किया गया। यह आयोजन हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कला निधि विभाग द्वारा संयुक्त रुप से किया गया। दो सत्रों में आयोजित किए गए इस भव्य कार्यक्रम में हिन्दी, बंगाली, पंजाबी तथा सिंधी आदि भारतीय भाषाओं में गीत-लोकगीत, कविता, माहिया और ग़ज़लों की प्रस्तुत की गईं। इस सत्र का संचालन अकादमी के सलाहकार संपादक एवं वरिष्ठ कवि विनोद पाराशर ने किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार शीला झुनझुनवाला की नवीनतम कृति 'पतझड़ में बसंत' का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक का प्रकाशन वाणी प्रकाशन द्वारा किया गया है। इस अवसर पर कला निधि विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के डीन प्रोफेसर (डॉ.) रमेश चंद्र गौड़, श्री अजीत कुमार, प्रभारी राजभाषा, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा दिल्ली के कई वरिष्ठ साहित्यकार एवं लेखक उपस्थित थे।

डॉ. शीला झुनझुनवाला ने अपने लेखकीय उद्बोधन में इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा एवं उद्देश्य पर विस्तार से वक्तव्य दिया। उपस्थित श्रोता उनके वक्तव्य से स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस कर रहे थे। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने अपने स्वागत वक्तव्य में मातृभाषाओं के संरक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा भाषा, संस्कृति और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को अपने वक्तव्य में सम्मिलित किया। डॉ. रमेश चंद्र गौड़ ने इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को की पहल पर अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री अजीत कुमार द्वारा किया गया।

विद्यालयी स्तर पर भारतीय भाषाओं के पौध को सींचने का हमारा जो स्वप्न है, उसे साकार करने में हम काफ़ी हद तक सफल हुए हैं। पिछले वर्ष जिस भव्यता और गरिमा के साथ भारतीय भाषा दिवस को सम्पन्न किया गया, वो हमारे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि रही है। एक स्ववित्तपोषित स्वयंसेवी संस्था के रुप में और कुछ सीमित समर्पित सदस्यों के साथ हम जिस जूनून के साथ काम कर रहे हैं, उस परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह एक बहुत बड़ा सफल कार्यक्रम रहा है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग और विशेष रुप से आदरणीय डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी के मार्गदर्शन से हम इस तरह के बड़े आयोजन कर पाते हैं। आयोजन की सफलता से ही हमारा उत्साहवर्धन होता है। आयोजन की इसी कड़ी में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में बुधवार, 11 दिसम्बर, 2024 को अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ, दिल्ली में भव्य रुप में भारतीय भाषा दिवस समारोह के अवसर पर 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष दिल्ली प्रदेश एवं गुरुग्राम के 305 विद्यालयों के 7125 मेधावी छात्रों को 'भाषादूत सम्मान', 303 छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' तथा 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 843 शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। यह सभी सम्मान देश के विख्यात साहित्यकारों, पत्रकारों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों एवं भाषा सेवियों की उपस्थिति में दिए जाएँगे।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार करने को संकल्पित और प्रतिबद्ध 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' की 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र' के साथ अब तक की सहयात्रा सुखद और उद्देश्यपरक रही है। इतने वर्षों के लम्बे अनुभव को एक आवरण कथा में सहेजते हुए कुछ ज़रूरी सूचनाएँ और घटनाएँ अवश्य छूटे होंगे। इस अनवरत यात्रा में हमें अनेक लोगों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, उनके प्रति हम आभारी हैं। आगामी दिनों में भी भारतीय भाषाओं के उन्नयन की दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण और गम्भीर कार्यों को करने का संकल्प लेते हुए हम इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ अब तक किए गए आयोजनों की मधुरिम स्मृति को सहेजते हुए, भविष्य में भी सहयोग, समभाव और मार्गदर्शन के लिए पूर्ण आशावादी हैं।

इस भव्य सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि फिजी गणराज्य के राजदूत महामहिम योगेश पुंजा जी थे। वहीं विशिष्ट अतिथियों में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के निदेशक, श्री अवनीश कुमार, श्री शरत चंद्र अग्रवाल, सदस्य केंद्रीय समिति, भारतीय योग संस्थान हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष, डॉ. कमल किशोर गोयनका, विख्यात साहित्यकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, विख्यात कवि डॉ. अशोक चक्रधर, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार बी. एल. गौड़, राजभाषा विभाग के डॉ. धनेश द्विवेदी, डॉ मुक्ता, पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्यकारी सम्पादक, डॉ. रमेश तिवारी, इन्दिरा गाँधी कला केंद्र के निदेशक (प्रकाशन) श्री अनिल कुमार सिन्हा, सलाहकार श्री आर के द्विवेदी, मंचासीन थे। अपने-अपने विद्यालयों के वर्दी में उपस्थित छात्रों, उनके हिन्दी शिक्षकों, अभिभावकों, प्रबुद्ध साहित्यकारों, गणमान्य अतिथियों एवं अकादमी के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति से सु-सज्जित प्रांगण वास्तव में हिन्दी भाषा का कुम्भ ही था। मंचासीन अतिथियों ने इस अभूतपूर्व आयोजन की मुक्त कंठ से प्रसंशा की। बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों ने इसे खूब सराहा। इस अवसर पर सम्मानित होकर सभी छात्र एवं उनके शिक्षक स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

भारतीय भाषाओं की नई पौध को सींचने की कड़ी में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा बुधवार, 4 मार्च 2020 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशाल प्रांगण में दिल्ली प्रदेश के भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों एवं उनके भाषा शिक्षकों के सम्मान में 'मेधावी छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह' का आयोजन सम्पन्न किया गया। समारोह में दिल्ली प्रदेश के 115 विद्यालयों के 3500 छात्र, 350 भाषा शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों, साहित्यकारों, विद्वत जनों एवं पत्रकारों की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी उपस्थित थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हँसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। विशिष्ट अतिथि के रूप में हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट, फिजी दूतावास के परामर्शदाता श्री नीलेश रोनिल कुमार तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष, श्री सुधाकर पाठक जी मंचासीन थे। दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान से कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ हुआ।

अपने स्वागत उद्बोधन में श्री सुधाकर पाठक ने विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि भाषिक विविधता और भाईचारा ही भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। निज भाषा के प्रति जिम्मेदारी का बोध होना ही हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। भारतीय भाषाओं के इन्हीं नवांकुरों को संरक्षित करने के उद्देश्य से अकादमी प्रत्येक वर्ष इस तरह का आयोजन करती है जो भाषाओं की नींव को और भी मजबूत करता है। दिल्ली में तीसरी बार इस तरह का आयोजन सम्पन्न किया जा रहा है और इसके सकारात्मक और सुखद परिणाम देखने को मिल रहे हैं। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव,डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी ने समारोह में उपस्थित विविध भाषाओं के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को एक ही प्रांगण में किसी सुंदर पुष्प माला की तरह एकत्रित होते हुए देख अपने उद्बोधन में कहा कि भाषाओं के संवर्धन के लिए यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण आयोजन है जहाँ दिल्ली प्रदेश के 3500 मेधावी छात्रों का विशाल समागम, जिन्होंने अपनी भाषा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि अपनी भाषाओं को लेकर वे और उनके शिक्षक तथा उनके विद्यालय कितने चिंतित हैं। वहीं, अपनी भाषा में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करना अपने आप में पूरे विश्व के लिए एक मिशाल है। यह केवल दिल्ली प्रदेश का ही नहीं, पूरे भारत का ही नहीं बल्कि वैश्विक चमत्कार है। अकादमी के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होने कहा कि जब हम अपनी मातृभाषा के लिए इतने सजग होकर काम करते हैं तभी देश की उन्नति होती है और यदि हमें भारत को विश्व के श्रेष्ठतम स्थान पर पहुंचाना है तो भारतीय भाषाओं का सम्मान करना होगा। आने वाले वर्षों में हमारे भाषा के प्रति गौरव और सम्मान प्राप्त करना हो तो हमें हमारे विद्यालयों में इसी तरह उत्साहवर्धक कार्य करने होंगे। मंचासीन अतिथियों द्वारा 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में हिन्दी एवं संस्कृत विषय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 49 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' से विभूषित किया गया, शेष छात्रों को जिन्होंने भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, उर्दू, गुजराती आदि) में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये थे उन्हें 'भाषा दूत सम्मान' से सम्मानित किया गया। सर्वाधिक प्रविष्टियाँ भेजने पर कुलाची हँसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली को 'भाषा प्रहरी सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' एवं अकादमी की अब तक की यात्रा को समेटे 'यात्रा अनवरत...' पुस्तिका का लोकार्पण भी किया गया।

विद्यालय स्तर पर छात्रों एवं शिक्षकों को अपनी भाषा से जोड़ने के उपक्रम में अकादमी द्वारा एक तरह का भाषाई वातावरण बनाया जा रहा है, जिससे भारतीय भाषाओं के शिक्षकों का डगमगाया हुआ सम्मान उन्हें दोबारा मिल सके। जहाँ पहले भारतीय भाषाओं के प्रति छात्रों, अभिभावकों, विद्यालय प्रबन्धन समिति एवं अन्य शिक्षकों की सोच दोयम दर्जे की थी, अब उसमें धीरे-धीरे सही, एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसी तरह युवा पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़ने और राजभाषा हिन्दी के प्रति उनके चिंतन और विचारों को जानने के उद्देश्य से हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर एक दिवसीय अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता को प्राथमिक चरण और निर्णायक चरण करके दो खंडों में विभाजित किया गया था। प्राथमिक चरण के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन अलग-अलग केन्द्रों में अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता के लिए श्याम लाल कॉलेज, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स और श्री वेंकटेश्वर कॉलेज को केन्द्र बनाया गया था। इस योजना के अंतर्गत प्रथम आयोजन शुक्रवार, 9 सितम्बर, 2022 को श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ। इसी तरह द्वितीय आयोजन शनिवार, 10 सितम्बर, 2022 को श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ। 'अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता' का तृतीय (अंतिम) आयोजन शनिवार, 17 सितम्बर, 2022 को श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस पूरी प्रक्रिया में विभिन्न कॉलेजों से आए हुए पंजीकृत प्रतिभागियों ने बड़े अनुशासन के साथ अपने-अपने चयनित विषयों पर ओजपूर्ण भाषण प्रस्तुत किए। तीनों केन्द्रों से निर्णायक मण्डल द्वारा कुल 30 (10+10+10) श्रेष्ठ वक्ताओं को निर्णायक चरण (फाइनल राउंड) के लिए चयनित किया गया। चयनित वक्ताओं को निर्णायक चरण के लिए शनिवार, 24 सितम्बर, 2022 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सम्वेत सभागार में आमंत्रित किया गया। चार सत्रों में आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन एवं परिचर्चा सत्र में डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी, सदस्य सचिव, श्री आनंद कुमार मिश्रा, उपायुक्त, दिल्ली पुलिस, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक, माइक्रोसॉफ्ट, डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई, वरिष्ठ साहित्यकार, श्री अजीत कुमार, निदेशक एवं प्रभारी, राजभाषा, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष सुधाकर पाठक मंचासीन थे। अपने स्वागत वक्तव्य में श्री सुधाकर पाठक ने 'भाषा महोत्सव' की परिकल्पना, उद्देश्य और इसकी पूरी प्रक्रिया की विवेचना की। उन्होंने कहा कि साहित्यिक एवं शैक्षिक जगत में यह एक अनूठा प्रयोग है, जिसके माध्यम से हम विश्वविद्यालय स्तर पर नई पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़ने का बाल प्रयास कर पा रहे हैं। अपने आधार वक्तव्य में डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी ने कहा कि युवाओं के बीच भाषा महोत्सव जैसे आयोजन का होना भविष्य की संभावनाओं की खोज है। डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई ने 'भाषा, साहित्य, संस्कृति और युवा' विषय पर, बालेंदु शर्मा दाधीच ने 'प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर हिंदी' तथा आनंद कुमार मिश्रा ने 'युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण और रोजगार में हिन्दी की भूमिका' विषय पर अपने सारगर्भित उद्बोधन से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र (भाषण प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण सत्र) में मंचासीन विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री दीपक दुबे, अध्यक्ष यू.पी.कल्चरल फोरम, डॉ. धनेश द्विवेदी, उप संपादक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, डॉ. जीतराम भट्ट, सचिव, हिंदी अकादमी, दिल्ली, श्री सुधाकर पाठक, अध्यक्ष, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी उपस्थित थे। निर्णायक मण्डल के रूप में डॉ. ज्योत्सना शर्मा, संपादक, राज्यसभा सचिवालय, डॉ. हेमा द्विवेदी, शिक्षाविद्, डॉ. रामकिशोर यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित थे। अन्तर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता के प्राथमिक चरण के अंतर्गत चयनित 30 श्रेष्ठ वक्ताओं के बीच हुए अन्तिम चरण की भाषण प्रतियोगित में सुश्री विशाखा, कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय को प्रथम स्थान, श्री अभ्युदय कुमार मिश्र, आत्म राम सनातन धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय को द्वितीय स्थान और श्री मनीष कुमार झा, आई. एम. एस. लॉ कॉलेज, नोएडा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। विजेताओं को क्रमश: नकद पुरस्कार राशि 3100/-, 2100/-, 1100/- के साथ प्रमाण-पत्र, स्मृति चिन्ह और पुष्प गुच्छ भेंट किए गए। 4 से 10 श्रेणी में आने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और स्मृति चिन्ह तथा शेष 20 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं मैडल देकर सम्मानित किया गया। प्राथमिक चरण की प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने वाले छात्रों को सहभागिता प्रमाण-पत्र भेंट किए गए।

इसी श्रृखला को आगे बढ़ाते हुए बुधवार, 28 सितम्बर, 2022 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा सम्वेत सभागार में हिन्दी पखवाड़े के समापन के अवसर पर सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया था। समारोह में लोकनृत्य, भाव नृत्य, काव्य-वाचन, सामूहिक गीत प्रस्तुति, सामूहिक नृत्य नाटिका, नुक्कड़ नाटक आदि जनचेतनामुलक कार्यक्रम सम्मिलित थे। एक्टर, मॉडल, नृत्यांगना, सामाजिक कार्यकर्ता जिन्होंने कई टीवी चैनलों में काम किया है, 15 शॉर्ट फिल्म,

600 से ज्यादा स्टेज शो, IFTV की ब्रांड एंबेसडर सहित 350 से ज्यादा अवार्ड जीतने वाली 12वीं कक्षा की छात्रा सुश्री वान्या सिंह ने बिरजू महाराज के गायन पर नृत्य प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध किया। अर्वाचीन इंटरनेशनल स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली के छात्रों द्वारा प्लास्टिक के दुष्परिणाम पर केंद्रित लघु नाटिका का मंचन किया गया तथा छात्र अंशुल शर्मा द्वारा 'रश्मिरथी' का स-स्वर पाठ किया गया। इसी तरह ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल, नारायणा विहार, दिल्ली द्वारा हिन्दी की दुर्दशा पर नुक्कड़ नाटक एवं सामूहिक गान प्रस्तुत किया गया। विभिन्न विद्यालयों से सु-सज्जित परिधानों में आए हुए नाटक मण्डली में बच्चों का जोश और उत्साह देखते ही बनता था। बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्यावरण संरक्षण पर लघु नाटिका ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा। समारोह में गीत एवं नाटक विभाग, भारत सरकार के कलाकारों द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न लोकनृत्य प्रस्तुति ने सभागार में चार चाँद लगा दिया। विभिन्न समुदायों की वेश-भूषा में सु-सज्जित कलाकारों की मनमोहक प्रस्तुति भारतीय लोक संस्कृति, सभ्यता, लोक कला और राष्ट्रप्रेम का अद्भुत संगम था। इस अवसर पर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक द्वारा बच्चों एवं शिक्षक प्रतिनिधियों को प्रमाण-पत्र, स्मृति चिन्ह एवं मेडल्स भेंट कर सम्मानित किया गया।

हिन्दी पखवाड़े को निरंतरता देते हुए दो दिवसीय (26-27 सितम्बर, 2023) सांस्कृतिक समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन 26 सितम्बर, 2023 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से श्री अजीत कुमार, निदेशक एवं प्रभारी (राजभाषा) तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पहले दिन संगीत एवं नाटक विभाग के कलाकारों द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों के लोक नृत्यों को प्रस्तुत किया गया। पारम्परिक वेशभूषा में सजे-धजे कलाकारों ने पंजाबी, हरियाणी, गुजराती, मराठी, हिमांचली आदि राज्यों की सांस्कृतिक संवृद्धि को प्रस्तुत किया। इस बहुभाषी लोक नृत्य को दर्शकों ने खूब सराहा। इस अवसर पर श्री अजीत कुमार ने उपस्थित दर्शकों को हिन्दी दिवस की शुभकामना देते हुए कहा, कि हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी भाषा के प्रोत्साहन एवं राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। सांस्कृतिक समारोह के दूसरे दिन का शुभारम्भ भी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में जेल सुधारक एवं मीडियाकर्मी डॉ. वर्तिका नंदा, डॉ. जीतराम भट्ट एवं सुधीर लाल, प्रभारी, कलानिधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मंचासीन थे। कार्यक्रम में दिल्ली प्रदेश के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों की उपस्थिति शोभायमान थी।

हंसराज महाविद्यालय की छात्रा सुश्री शार्वी शर्मा द्वारा सरस्वती वंदना नृत्य से सांस्कृतिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। लखनऊ से पधारे बाँसुरी वादक श्री मुकेश कुमार 'मधुर' की बाँसुरी वादन ने सभागार में उपस्थित सभी को मंत्रमुग्ध किया। बालकवि जश्न महाला और अंशुल शर्मा ने भी अपनी बेजोड़ प्रस्तुति से सभी का ध्यान आकृष्ट किया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार के छात्रों ने देशभक्तिपूर्ण सामूहिक गीत प्रस्तुत किया तो अर्वाचीन इंटरनेशनल स्कूल, दिलशाद गार्डन के छात्रों ने साइबर क्राइम पर केंद्रित नुक्कड़ नाटक और माउंट कार्मेल स्कूल, द्वारका के छात्रों ने पर्यावरण पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। हंसराज महाविद्यालय के छात्रों ने विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति से सभी को मोहित किया। संगीत एवं नाटक विभाग के कलाकारों ने भी विभिन्न लोक नृत्यों से समरोह में चार चाँद लगाया। इस अवसर पर काव्य पाठ का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समापन श्री अजीत कुमार, श्री जीतराम भट्ट एवं सुधाकर पाठक के हाथों से सहभागिता करने वाले विद्यालयों, छात्रों, शिक्षकों एवं कवियों को पुरस्कार वितरण एवं सम्मान अर्पण करके किया गया। छात्रों को सम्मान स्वरूप नकद पुरस्कार राशि, सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह एवं मेडल्स भेंट किए गए।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी अपने सीमित संसाधनों के द्वारा भाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के साथ-साथ स्तरीय साहित्य के प्रकाशन, अनुवाद और संवर्धन के क्षेत्र में भी कार्य कर रही है। नए लेखकों और युवा पीढ़ी के साहित्यकारों को मंच प्रदान करने और उनके साहित्यिक चिंतन को मुख्यधारा के साहित्य से जोड़ने का उपक्रम भी कर रही है। इसी योजना के अंतर्गत युवा कवि, लेखक और अनुवादक श्री राजकुमार श्रेष्ठ द्वारा सुधाकर पाठक जी की पुस्तक 'ज़िन्दगी कुछ यूँ ही' का नेपाली अनुवाद 'जिन्दगी केही यस्तै' और वरिष्ठ कथाकार सुरेखा जी की सद्य प्रकाशित 'प्रतिनिधि कहानियाँ' का लोकार्पण 8 दिसम्बर, 2018 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, कलानिधि विभाग में किया गया जहाँ भारत और नेपाल का सुन्दर मैत्री सम्मिलन देखने को मिला। इस भव्य आयोजन में हिन्दुस्तानी भाषा भारती पत्रिका के नवीनतम नेपाली विशेषांक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस

गणराज्य के राजदूत श्री जगदीश्वर गोवर्धन थे, किन्तु मॉरीशस सरकार के मंत्री समूह के आगमन के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। उनके प्रतिनिधि के रुप में दूतावास के प्रथम सचिव श्री उमेश सुखमनी जी उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथियों में डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, श्री होम प्रसाद लुइटेल, सांस्कृतिक सलाहकार, नेपाल दूतावास, दिल्ली और उमाकांत आचार्य थे। स्वागत वक्तव्य डॉ रमेश चन्द्र गौड़, विभागाध्यक्ष, कलानिधि ने दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. धनेश द्विवेदी ने किया। श्री राजकुमार जी ने बड़े प्रभावशाली अंदाज़ में अनुवादक की भूमिका पर सारगर्भित विचार रखते हुए खास मोहक अंदाज़ में पुस्तक की एक कविता का दोनों भाषाओं में काव्यपाठ किया।

अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातारण बनाने और भाषाई सौहार्द विकसित करने के उद्देश्य से 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार' एवं 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली' के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में बुधवार, 6 दिसम्बर, 2023 को तालकटोरा स्टेडियम में 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया गया। इस विहंगम सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम नाथ कोविन्द जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी की गरिमामयी उपस्थित थीं। अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी, डॉ. अजीत कुमार जी, निदेशक (रा.भा.) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक मंचासीन थे। मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम को विधिवत रुप से शुभारम्भ किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो वह कोई भाषा नहीं जानता। वह सबसे पहली भाषा वही सीखता है, जो उसकी माँ उसे सिखाती हैं। इसीलिए उसे मातृभाषा की संज्ञा दी गई है। उन्होंने कहा कि विदेशों में भारतीय भाषाओं को सिखाया जा रहा है। सबसे अनूठी बात यह है कि देश-दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति रुझान बढ़ा है। हमारी भाषाएँ बहुत प्राचीन हैं, जिन्होंने हमारी युवा पीढ़ी को जोड़ने का काम किया है। हमें अपनी भाषा को बढ़ावा देना होगा, तभी गुलामी की जंजीरे टूटेंगी। भाषा वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपना ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है।

मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों और भाषा शिक्षकों को देखकर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है। इतना विराट, विशाल और वैभवशाली भारत आज मेरे सामने हैं। इस विहंगम दृश्य को देखकर कौन मुग्ध और मोहित नहीं होगा। मुझे इसे बात की प्रसन्नता है कि आज माली और फूल एक साथ बैठे हैं। शिक्षक के रुप में आप सभी गुरुजन माली और शिष्यों के रुप में उपस्थित सभी फूल। मैं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा देश के भविष्य और देश के भविष्य के निर्माताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने हेतु भारतीय भाषा उत्सव आयोजित करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सचमुच भाषा हमें गढ़ती हैं और अपनी मिट्टी से जोड़ने का काम भी करती है। भारत केवल प्राचीन सभ्यता के लिए ही नहीं, अपितु अपनी संस्कृति और भाषाई संस्कृति के लिए भी जाना जाता है। भाषा ही हमारे भीतर आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का विकास करती है। हमें संस्कारित करने के साथ मानवीय मूल्यों और मान्यताओं से भी जोड़ती है।

इस वर्ष सम्मान समारोह में दिल्ली एवं गुरुग्राम के प्रतिष्ठित 268 विद्यालयों के 8166 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', शत प्रतिशत (100%) अंक प्राप्त करने वाले 145 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' एवं 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 745 भाषा शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। अपने-अपने विद्यालयों की बर्दी में सु-सज्जित छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति से ऑडिटोरियम शोभायमान था और यह दृश्य अपने आप में बहुत अद्भुत और अप्रतिम था।

# भाषा, समाज और सामर्थ्य का भारतीय परिदृश्य

गिरीश्वर मिश्र, पूर्व कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

हमारे जीवन में भाषा कुछ इस तरह और इतनी गहरी पैठी हुई है कि आम तौर पर हमें उसकी  शक्ति का अंदाज़ा ही नहीं लगता, कुछ वैसे ही जैसे सूरज की रोशनी से सारी दुनिया को जीवन शक्ति मिलती है। पर सूरज प्रकृति का स्वाभाविक हिस्सा है, पूरी तरह से नैसर्गिक, जब कि भाषा मनुष्य की रचना, एक ऐसी कृति जो उसके आविष्कार और अभ्यास पर टिकी होती है, पर है सूरज की ही तरह शक्तिशाली। दुनिया क्या है और उस दुनिया में हम क्या कुछ करते हैं या कर सकते हैं यह सब बहुत हद तक भाषा का चमत्कार लगता है। भाषा के लेंस के सहारे ही हम दुनिया को देखते-समझते है, वस्तुओं को पहचानते हैं। भाषा से ही खुद को पहचानते हैं और दूसरों को पहचनवाते हैं, आपस में संवाद करते हैं,  अपने भावों को व्यक्त करते हैं, लोगों को निर्देश देते हैं, सूचना और ज्ञान को संजोते हैं और दूसरों तक पहुँचाते हैं, प्रार्थना करते हैं।  भाषा हमारे अस्तित्व का प्रमाण बन जाती है। उसकी शक्ति से ही हम जीवंत होते हैं।

सच कहें तो भाषा के तिलस्म का विस्तार अछोर और गहराई अथाह होती है। एक सतत सर्जनशील उपक्रम होने के कारण भाषा का तिलस्म कभी कम होने वाला नहीं है। भाषा में प्रयोग भी होते हैं और वह अपनी शक्ति का स्वयं अतिक्रमण करती रहती है। उसकी रचनाशीलता जीवन में ताज़गी बनाए रखती है। भाषा से क्या कुछ नहीं होता । पर भाषा सिर्फ़ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं होती उसका अपना भी निजी वजूद होता है यानी भाषिक कर्म की अपनी सत्ता भी होती है। उसका सौष्ठव और सौंदर्य साहित्य में ही नहीं हमारे आचरण का भी एक ख़ास हिस्सा होता है। कब क्या और कैसे बोलें इसका भी सामाजिक रुप से स्वीकृत व्याकरण होता है और इसके सामाजिक मानक हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन को सहज या मुश्किल बनाते रहते हैं।

सभ्य समाज में भाषा की एक बनी बनाई दुनिया बच्चे को तैयार मिलती है। उसके परिवार में प्रयुक्त भाषा के प्रवाह के बीच वह अपना जीवन शुरु करता है। ध्वनियाँ उसके कानों में गूंजती रहती है और आने परिचय का दायरा बनाती रहती हैं। परिचित होता हुआ बच्चा इन ध्वनियों का स्वाद पाता रहता है। उच्चारण के यंत्र के परिपक्व होने के साथ वह शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करना शुरु कर देता है। सभ्य समाज का सदस्य बनाने में भाषा का बड़ा हाथ होता है। बिना किसी स्कूल गए अपनी मातृभाषा की आधारभूत प्रयोगशीलता बच्चे को स्वतः खेलते-कूदते हुए मिल जाती है। भाषा-प्रयोग की शक्ति नैसर्गिक या प्राकृतिक होती है और परिवार के अनौपचारिक  परिवेश में उसका उद्घाटन और विकास होता रहता है। स्कूल का औपचारिक परिवेश इस योग्यता का उपयोग करते हुए शिक्षा में आगे बढ़ने के कार्य को सुगम कर सकता है। यदि मातृभाषा ही स्कूल की भाषा रहे तो स्कूल का आकर्षण और ज्ञानार्जन का काम सभीते से होगा। दूसरी ओर मातृभाषा को ख़ारिज कर दूसरी भाषा को माध्यम बनाएँ तो सीखने का काम मुश्किल हो जाता है। बच्चे के लिए यह काम भी करना होता है कि कब किस भाषा का (स्कूली भाषा या मातृभाषा?) का उपयोग किया जाय। बच्चे के ज्ञानार्जन का क्रम इस पर भी निर्भर करेगा कि उन दोनों भाषाओं का पारस्परिक रिश्ता कैसा है। भाषा प्रयोग की महारत भी इससे प्रभावित होती है। बच्चों में भाषा ग्रहण करने की तत्परता होती है इसलिए समर्थन मिलने पर वे इस जटिलता को सँभाल लेते हैं पर ज़्यादातर बच्चों में दुविधा बनी रहती है। ख़ास तौर पर यदि कोई एक भाषा सामाजिक आभिजात्य से जुड़ जाए।

भारत में स्कूली भाषा के रुप में अंग्रेज़ी को तरजीह देने की प्रवृत्ति जारी है और मातृभाषा को दोयम दर्जा देने का चलन घर कर गया है। इससे भाषा-प्रयोग की शक्ति और ज्ञानार्जन की प्रगति दोनों प्रभावित हो रही है। साथ ही भाषा में संस्कृति गुँथी होती है भाषाई संस्कार को दुर्बल बनाते हुए सांस्कृतिक अपरिचय या भ्रम को भी बल मिलता है। कोई बच्चा बहुत सारी चीज़ें मातृभाषा में जानता है परंतु अंग्रेज़ी में उन चीजों के नाम को नहीं जानता है। ऐसे में अंग्रेज़ी के निकष पर ( ज्ञान होने पर भी !) वह अज्ञानी ही कहा जाता है। ऐसी दुविधाएँ बच्चों के आत्मविश्वास को खंडित करती हैं और अपनी संस्कृति से दूरी भी बढ़ाती हैं। व्यक्तित्व की रचना और अभिव्यक्ति की शक्ति को भी ये क्षीण करती हैं। देश की नई शिक्षा नीति में स्कूली स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने का स्पष्ट प्राविधान किया गया है परंतु ज़मीनी हालात में परिवर्तन नहीं आ रहा है। देश के विकास और भावी भारत की सामर्थ्य को सुनिश्चित करने की ज़रुरत को ध्यान में रखते हुए शिक्षा जगत के लिए मातृभाषा के उपयोग पर गम्भीरता से लेना होगा। विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए शिक्षा ही एक मात्र उपाय है । शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए भाषा की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। भारत का भाषाई संसार वैविध्यपूर्ण और समृद्ध है इसका लाभ उठाना आवश्यक है। इस सत्य की उपेक्षा कर भाषाई उपनिवेश को बढ़ावा देने पर मानसिक ग़ुलामी ही बढ़ेगी ।

शिक्षा देश के सर्वतोमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक निवेश है। शिक्षा देने के उपायों में भाषा का उपयोग सर्वविदित है क्योंकि ज्ञान प्रायः भाषा में ही निबद्ध होता है और उसके समुचित सहयोग लिए बिना शिक्षा की प्रगति प्रतिबंधित ही रहेगी। भाषा समाज की बिरासत और सम्पदा होती है जिसमें जीवन के सहज स्वर गूंजते हैं। यदि शिक्षा का आयोजन समाज की अपनी भाषा न हो कर कोई पराई भाषा हो ज्ञान पाने का काम दुहरी तिहरी कठिनाई वाला हो जाता है। उस अतिरिक्त भाषा को अपनाना एक अतिरिक्त काम हो जाता है जो समाज की मूल भाषा में व्यवधान भी डालता है और ज्ञान अर्जित करने के काम को अधिक कठिन बना देता है। इस दृष्टि से विचार करने पर उच्च शिक्षा के लिए माध्यम के प्रश्न पर विचार करते हुए हमारा ध्यान भारत की भाषाई विविधता पर जाता है जो देश की एक प्रमुख सामाजिक विशेषता है। यहाँ पर हज़ार से ज़्यादा भाषाएँ हैं जो विश्व के अनेक भाषा-परिवारों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन भाषाओं का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है और इनके प्रयोग करने वालों की संख्या में बड़ी विविधता है। यदि प्रमुख भाषाओं की बात करें तो आज की स्थिति यह है कि संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को अंकित किया गया है जो प्रमुखता से आज प्रयोग में आ रही हैं। हिंदी को वैधानिक राज भाषा का दर्जा मिला हुआ है और अंग्रेज़ी सह राज भाषा है।

उच्च शिक्षा का वर्तमान स्वरूप अंग्रेज़ी राज में औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य में शुरु हुआ था और किसी भारतीय भाषा की जगह विदेश की अंग्रेज़ी भाषा को उसके संचालन के लिए एकमात्र माध्यम के रुप में स्थापित किया गया। यह अंग्रेज़ी राज की सुविधा के लिए और उसकी साम्राज्यवादी सोच के अनुसार था। पश्चिमी ज्ञान को श्रेष्ठ मानते हुए भारत में उसके प्रसार के लिए अंग्रेज़ी बड़ी मुफ़ीद साबित हुई। इस तरह भाषा और ज्ञान के विषय दोनों का ही आयात किया गया और यहाँ की उच्च शिक्षा की संस्थाओं को उसके अनुरुप ढाला गया। पठन-पाठन और मूल्यांकन आदि की पूरी व्यवस्था बर्तानवी विश्वविद्यालय के ढाँचे पर अपनाई गई। कहना न होगा कि इस तरह की औपनिवेशिक व्यवस्था में अंग्रेज़ी भाषा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान और संस्कृति का विस्तार भी भारत में हुआ। उसे प्रामाणिक, प्रासंगिक और उपयोगी कह कर इस तरह प्रचारित प्रसारित किया गया कि लोगों के मन में बैठ गया कि यही ठीक है। इसका स्वाभाविक परिणाम यहाँ की ज्ञान परम्परा और भारतीय भाषाओं की सतत उपेक्षा के रूप में सामने आया। इस प्रक्रिया में भारतीय शिक्षा का भारत के साथ विलक्षण सम्बन्ध बना जिसमें भारत पश्चिमी ज्ञान के उपयोग की एक प्रयोगशाला बनता गया और देशज ज्ञान हाशिए पर जाता रहा या फिर उसे पश्चिमी ज्ञान के अनुकूल ढाला गया। इस तरह भारत के ज्ञान-केंद्रों पर ज्ञान-सृजन करने की जगह ज्ञान का अनुकरण और समायोजन का काम ही चलता रहा। विद्यार्थी वर्ग के लिए ज़रुरी शैक्षिक समाजीकरण के अन्तर्गत अंग्रेज़ी सीखना, पश्चिमी ज्ञान देने वाले विषयों को सीखना और सुविधानुसार उसका उपयोग करना एक मानक काम बन गया। ऐसे में न केवल शिक्षा की जटिलता बढ़ गई बल्कि देश की प्रकृति की समझ भी बिगड़ती गई।विद्यार्थी पर शिक्षा का भार भी बढ़ गया। साथ ही एक हीनता की ग्रंथि का भी बीजारोपण हो गया। उसे सदा के लिए दूसरे की ओर देखना नियति बन गई। ग़ुलामी की मानसिकता इतनी प्रचंड थी कि आज भी कई स्कूल अंग्रेज़ी न बोलने और हिंदी जैसी भारतीय बोलने पर दंडित करते हैं। अंग्रेज़ी में गिटपिट बहुतों के लिए सुरक्षा कवच है तो बहुत लोग इसे रोब ग़ालिब करने का ज़रिया बनाए हुए हैं। आज भी कइयों के लिए अपनी विशिष्टता दिखाने

और अलग पहचान बनाने के लिए अंग्रेज़ी एक मज़बूत वैसाखी बन खड़ी होती है। एक भाषा के रूप में अंग्रेज़ी का अपना महत्व और आकर्षण है जिसे सभी स्वीकार करते हैं। अंग्रेज़ी के अपने नाज़ औ नख़रे हैं, सौष्ठव है, असर है और वह बना रहे परंतु भारतीय भाषाओँ को विस्थापित कर अंग्रेज़ी मेम की जिस तरह तूती बोलती है वह किसी लोकतंत्र की गरिमा के अनुरुप नहीं है। भारत में भाषा की ग़ुलामी की दास्तान लम्बी हो चली है उसके दुष्परिणाम का आकलन सरल नहीं है। यहाँ इतना कहना ही काफ़ी होगा कि अपनी भाषा के स्वास्थ्य बनने और बिगड़ने के साथ विचार, आचार और पूरी संस्कृति भी बनती बिगड़ती है ।

भाषा-प्रयोग का एक पक्ष यह भी है कि भाषा की अभिव्यक्ति मौलिक अधिकार है पर वास्तविकता कोसों दूर है। न्यायालय, विश्वविद्यालय, कार्यालय और अस्पताल हर कहीं आज अंग्रेज़ी का ही वर्चस्व बना हुआ है। अलिखित रुप से भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति पर बंदिश और अंग्रेज़ी पर प्रलोभन का वातावरण चारों ओर व्याप्त हो रहा है। यह स्थिति सामान्य मानव अधिकारों के हनन को भी बख़ूबी व्यक्त करती है। हमें यह याद रखना होगा कि लोकतंत्र की मर्यादा है सबके लिए अवसर की समानता, समता, बंधुत्व और इन सबके लिए संवाद ही मुख्य आधार होता है। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा के साथ समाज में बड़े छोटे की दो कोटियाँ - अंगरेजीदाँ और ग़ैर अंग्रेज़ीदाँ की खड़ी कर दी गई जिसके दूरगामी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिणाम हुए जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाले सिद्ध हए। उससे उपजने वाली असुविधा और दुविधा पसरती गई और उससे अंग्रेज़ी की श्रेष्ठता और प्रामाणिकता को बल मिलता रहा। साथ ही सामाजिक जीवन में ऊँच नीच के भेद भाव और पूर्वाग्रह का भाषाई आधार स्वतंत्र भारत में दिन प्रतिदिन मज़बूत होता गया। लोकतंत्र में शासक और शासित या प्रजा तथा राजा के बीच की दूरी कम होनी चाहिए थी पर वह बढ़ती रही। भारतीय संविधान भी मूलतः अंग्रेज़ी में ही तैयार हुआ। परीक्षाओं और नौकरी में अंग्रेज़ी को प्राथमिकता का रिवाज अभी भी प्रचलित है। इस माहौल में यही संदेश फैला कि भारतीय भाषाएँ विचलन हैं और मानक भाषा सिर्फ़ अंग्रेज़ी है। इसका दबाव भाषाओं में अस्वाभाविक दख़ल के रूप में उभरने लगा। भारतीय समाज और संस्कृति को देखने का देशज की जगह विदेशी नज़रिया प्रचलित हुआ और आधुनिक ज्ञान का विकास अपनी जड़ें उस तरह से न जमा सका जो होना चाहिए था।

चूँकि हमारा जीवन व्यापार ज़्यादातर भाषा की सहायता से ही सम्पादित होता है दुनिया के साथ उसका रिश्ता भाषा की मध्यस्थता के बिना अकल्पनीय है। इसलिए भाषा सामाजिक सशक्तीकरण के विमर्श में प्रमुख किरदार है फिर भी अक्सर उसकी भूमिका की अनदेखी की जाती है। वर्तमान सरकार देश को आत्मनिर्भर और स्वदेशी की दिशा मेनम आगे ले जाने के लिए कृतसंकल्प है। आत्म-निर्भरता के लिए ज़रुरी है कि अपने स्रोतों और संसाधनों के उपयोग को पर्याप्त बनाया जाए ताकि कभी दूसरों का मुँह न जोहना पड़े। कभी इस तरह की बातें ग़ुलाम देश को अंग्रेज़ी साम्राज्य की क़ैद से स्वतंत्र कराने और स्वराज्य स्थापित करने के प्रसंग में की ज़ाती थीं। अंग्रेज गए, स्वराज्य आया और देश में अपना शासन स्थापित हुआ। जनतंत्र में जिस लोकशाही की उम्मीद थी वह धीरे-धीरे बिखरती गई और राजा और प्रजा , शासक और शासित का भेद बढ़ता गया। शरीर तो भारत का रहा पर मन और बुद्धि अंग्रेज़ीमय या अंग्रेज़ीभक्त हो गया। भवसागर से मोक्ष के लिए हमने अंग्रेज़ी की नौका को स्वीकार किया और उसे शिक्षा तथा आजीविका का स्रोत बना दिया। अंग्रेज़ी से मुक्ति अंग्रेजों से मुक्ति से कहीं ज़्यादा मुसीबतज़दा और मुश्किल पहेली बन गई। मानसिक उपनिवेश बने रहने का सीधा परिणाम यह हुआ कि सृजनात्मकता प्रतिबंधित होती गई ।

वर्तमान सरकार ने आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी की अवधारणा को विमर्श के केंद्र में लाकर सामर्थ्य के बारे में हमारी सोच को आंदोलित किया है। इसी कड़ी में नई शिक्षा नीति में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रुप में अवसर देने पर विचार किया गया है। शिक्षा स्वाभाविक रूप से संचालित हो इसके लिए मातृभाषा में अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए । इसलिए बहुभाषिकता के आलोक में मातृभाषा का आदर करते हुए भाषा की निपुणता विकसित करना आवश्यक है। अमृत-महोत्सव के संदर्भ प्रधान मंत्री ने ग़ुलामी की मानसिकता से मुक्त होने के लिए आह्वान किया है और इसके लिए मातृभाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था ज़रुरी है।

यह स्मरणीय है कि भाषा सबकी ज़रुरत है। हवा, पानी और भोजन की ही तरह यह भी बेहद ज़रुरी है। हम जो होना चाहते हैं उसके बारे में सोचना और उसकी ओर आगे बढ़ने के लिए हम भाषा का ही सहारा लेते हैं । दर असल भाषा का कोई विकल्प नहीं

है । भाषा से गुज़र कर ही हम सोचते हैं और किसी भी तरह के सृजन को आकार मिलता है । कह सकते हैं भाषा आत्मा या कहें हमारे अस्तित्व का लिबास होती है । साथ ही वह आवरण का भी काम करती है और दुराव-छिपाव को भी संभव बनाती है और हम जो चाहते हैं उसकी अभिव्यक्ति भी संभव करती है । उसके प्रयोजन अनेक होते हैं और उनकी कोई सीमा भी तय नहीं की जा सकती । जैसे मिट्टी के बर्तन से कुम्हार तरह-तरह के बर्तन बनाता है जिनसे भिन्न-भिन्न काम लिए जाते हैं वैसे ही भाषा से भी तरह-तरह के काम लिए जाते हैं । भाषा के काम इतने हैं कि यदि यह कहें कि भाषा कर्तृत्व की सीमा है तो अत्यक्ति न होगी। भाषा एक संवेदनशील और परिवर्तनक्षम उपकरण है । भाषा की ख़ासियत यह भी है कि उसकी सामर्थ्य विकसनशील और सर्जनात्मक है और इस अर्थ में अनंत है। भाषा ही वह आँख है जिससे हम दुनिया देखते समझते हैं। उसकी संभावनाओं की श्रृंखला का कोई ओर-छोर नहीं होता है ।

यह ज़रूर है कि किसी भी समय भाषाओं की दुनिया में बड़ी विविधता है। कोई भाषा अकेली नहीं होती । प्रयोक्ताओं की दृष्टि से कुछ अधिक व्यापक होती हैं तो कुछ कम । भाषा रचना भी है और रचना का माध्यम भी । वह जितनी प्रयोक्ता में उपस्थित रहती है उससे कम प्रयोग में नहीं। वह कई रुप धारण करती है । यह भी नोट करना होगा कि सामाजिक जीवन की यह विवशता है कि राजनीति भी भाषा के औजार से ही की जाती है। उसी के आधार पर संचार होता है और संवाद और विवाद की घटनाएँ भी होती हैं । हम लोग सार्वजनिक जीवन और मीडिया में देख पा रहे हैं कि भाषा एक बड़ा लचीला और बहु उद्देशी माध्यम है और उसका उपयोग दुरुपयोग दोनों हो रहा है । पर भाषा का भी अपना जीवन होता है और वह भी राजनीति का शिकार होती है । भाषा की शक्ति को पहचानना और उपयोग करना भी महत्वपूर्ण है । भारत की संविधानस्वीकृत राजभाषा हिंदी की स्थिति यही बयान करती है। स्वतंत्रता मिलने के पहले की राष्ट्र भाषा हिंदी को स्वतंत्र भारत में चौदह सितम्बर 1949 को संघ की राजभाषा के रुप में भारतीय संसद की स्वीकृति मिली थी। यह स्वीकृति सशर्त हो गई ! जो व्यवस्था बनी उसमें हिन्दी विकल्प की भाषा बन गई। आज विश्व में संख्या बल में इसे तीसरा स्थान प्राप्त है। दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस भी मनाया जाता है। 14 जनवरी का हिंदी दिवस हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के संकल्प से जुड़ गया और 1953 से मनाया जा रहा है ।

देश राजनीतिक रुप से स्वतंत्र हुआ परंतु मानसिक या वैचारिक स्वराज की दृष्टि से संशय बरकरार रहा। बारहवीं सदी से प्रयुक्त हो रही हिंदी स्वतंत्रता संग्राम के दौर में फूलती-फलती रही। हिंदी जो 'भारत–भारती' का गान कर रही थी। हिंदी को घर में नज़रबंदी के आदेश के साथ ज़मानत मिली। उसे जो स्वीकृति मिली थी वह निर्वासन की सजा के साथ मिली ताकि वह अपने को सुधार कर ज़रुरी योग्यता हासिल कर सके जिसकी पुष्टि जब तक 'सभी ' न कर दें वह ज़मानत पर ही रहेगी ।

सरकारी कृपा-दृष्टि से हिंदी को योग्य बनाने के लिए क़िस्म-क़िस्म के इंतज़ाम भी शुरु हुए । शब्द बनाने की सरकारी टकसाल बनी, प्रशिक्षण की व्यवस्था हुई, हिंदी भाषा अध्ययन और शोध के कुछ राष्ट्रीय स्तर के संस्थान भी खड़े हुए, प्रदेश स्तर पर हिंदी अकादमियाँ बनीं और विश्वविद्यालय स्थापित हुए । हिंदी के लेखकों और सेवकों को प्रोत्साहित करने के लिए नाना प्रकार के पुरस्कारों की भी व्यवस्था हुई। साथ ही राजभाषा सचिव और सचिवालय भी बना । संसदीय राजभाषा समिति देश में घूम कर हिंदी की प्रगति का जायज़ा लेती है । विभिन्न मंत्रालयों के लिए हिंदी की सलाहकार समितियाँ भी हैं जिनकी बैठक में सरकारी काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने का संकल्प दुहराया जाता रहता है । एक केंद्रीय हिंदी समिति भी है जो पाँच सात साल में एक बार बैठती है । एक बड़ा भारी सरकारी अमला मूल अंग्रेज़ी के हिंदी अनुवाद मुहैया कराने की मुहिम में जुटा हुआ है परंतु वह अनुवाद इतना नीरस और इतना अग्राह्य हो जाता है कि उसका वास्तविक उपयोग नहीं होता है । हिंदी के उन्नति के लिए उठाए गए कदम कौन सी भाषा, किसके लिए और किस उद्देश्य से प्रेरित थे और उनकी अब तक की उपलब्धियाँ क्या हैं इसे जानने की फ़ुरसत नहीं है। हिंदी के प्रति सरकारी संवेदना जीवित है और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सन 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलन की जो शुरुआत हुई उसकी कड़ी भी आगे बढ रही है। यह संतोष की बात है कि माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्रीमती सुषमा स्वराज और प्रधान मंत्री मोदी ने हिंदी की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति को भलीभाँति प्रभावी और प्रामाणिक ढंग से रेखांकित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को दर्ज कराने के प्रयास भी होते रहे हैं और उसमें तेज़ी आई है। अब वहाँ के संचार कार्यक्रम में हिंदी को ज़्यादा जगह मिल रही है।

देश के भीतर सरकारी कार्य की औपचारिकताएँ होती हैं, ताम-झाम होते हैं, अनुष्ठान होते हैं, आदेश और निर्देश के दस झमेले होते हैं। उन सबके बीच प्रयोजनमूलक हिंदी का उद्धार हो सके और सरकार और जनता के बीच हिंदी संवाद सेतु का कार्य कर सके इसके लिए प्रयासों के बीच संवरती उभरती निर्जीव काग़ज़ी हिंदी खड़ी करने का काम सरकारी भाषा विभाग सात दशकों से करता आ रहा है। थोपी हुई अपरिचित अस्वाभाविक भाषा जनता में प्रयोग से बाहर हो जाती है। वह दम तोड़ने लगती है। सहज शब्द वाली लोकहिंदी की जगह खाँटी प्रयोजनमूलक जो हिंदी बनाई जा रही है जो अंततः निष्प्रयोजन हो जाती है सिवाय इसके कि अंग्रेज़ी की सामग्री के एक हिंदी रुपांतर की खानापूरी की क़वायद पूरी हो जाती है । कई ग़ैर सरकारी हिंदीसेवी संस्थाओं और संगठनों ने शुभ संकल्प के साथ काम शुरु किया था परंतु अब उनमें से अधिकांश की स्थिति संतोषजनक नहीं रह गई है। इसका एक मुख्य कारण संसाधनों का अभाव है परंतु पुरानी निष्ठा भी नहीं रही न विद्वानों का सहयोग ही पहले जैसा रह गया है।

एक सशक्त भाषा को प्रकट में सशक्त करने परंतु वास्तव में उसके पर कुतरने के लिए हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा या हिंदी मास का आयोजन चल पड़ा । अब विभिन्न संस्थान चौदह सितम्बर के इर्द-गिर्द कुछ आयोजन कर हिंदी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हैं। एक सशक्त भाषा के प्रति सभ्य समाज का इस तरह का व्यवहार यह साबित करता है कि हिंदी को लायक़ बनाना कितना मुश्किल काम है और उसकी हालत जायज़ है। हाशियाकरण का स्मृति चिह्न बन कर हिंदी की दुर्बलता की लगातार पुष्टि करने वाला यह स्मारक यह बतलाता है कि भाषा के प्रति हमारी दृष्टि उपेक्षा की ही बनी रही है।

आज मन में अपनी भाषा के लिए प्रतिष्ठा का भाव नहीं रहा। प्रतियोगिता और पुरस्कार सब किया जाता है पर उसे कर्म के स्तर पर जीवन में अपनाने के लिए हम तैयार नहीं हैं । गौर तलब है कि अपनी भाषा में अध्ययन न कर उधार की अंग्रेज़ी के अभ्यास साथ बहुसंख्यक छात्र समुदाय में सोचने की अक्षमता बढ़ी है, मौलिकता और रचनाशीलता में कमी आई है। रटा हुआ ज्ञान पढ़ा पढ़ाया जा रहा है। उससे बाहर नज़र डालें तो आज भी ज़िंदगी में अपने आस-पास बचे-खुचे नाते-रिश्ते, शादी-व्याह, खान-पान, तिथि-महीने, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, साग-सब्ज़ी ही नहीं प्यार-मुहब्बत, रार–इकरार, और दुःख-दर्द आदि की उपस्थिति की अनुभूति और अभिव्यक्ति जिस सहजता और प्रभाव के साथ अपनी भाषा में होती है । हिंदी भारतीय संस्कृति की धड़कन है, हमारी जीवंतता का प्रमाण। उसकी शक्ति हमें समर्थ बनाती है।

वस्तुतः रचनाशीलता जीवन की निरंतरता का पर्याय होती है। हमारे होने और न होने के लिए हमारी सृजन शक्ति ही ज़िम्मेदार होती है। कुछ रचने के लिए, उस रचना तक पहुँचने और दूसरों तक पहुँचाने के लिए सहजतम और प्रभावशाली माध्यम हमारी भाषा होती है । किसी व्यक्ति या समुदाय से उसकी अपनी भाषा का छिनना और मिलना उनके अपने अस्तित्व को खोने-पाने से कम महत्व का नहीं होता है । समाज और राष्ट्र को सामर्थ्यशील बनाने के लिए उसकी अपनी भाषा को शिक्षा और नागरिक जीवन में स्थान देने के लिए गंभीर प्रयास ज़रूरी है। नई शिक्षा नीति की संकल्पना में मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान इस दृष्टि से बड़ा कदम है।

**वर्तमान सम्पर्क :**
**307, टावर-1, मैजेस्टिक फ़्लोर्स, इंदिरापुरम, ग़ाज़ियाबाद – 201014**
**misragirishwar@gmail.com मो. 9922399666**

# राष्ट्रीय विकास और भारतीय भाषाओं के बढ़ते कदम - प्रेमपाल शर्मा

हाल ही में भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने न्यायालय के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए हिंदी और भारतीय भाषाओं के पक्ष में बहुत महत्वपूर्ण बात कही है। उन्होंने कहा कि "हमें अंग्रेजों के युग की मानसिकता को दफनाना होगा। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के लगभग 73000 निर्णय हिंदी और भारतीय भाषाओं में पोर्टल पर उपलब्ध हैं। जिला अदालत आम जनता का सबसे पहले संपर्क बिंदु होती है इसलिए उनको अपनी भाषाओं में न्याय देने के लिए तैयार रहना चाहिए"।

प्रश्न यह उठता है कि आख़िर यह अंग्रेज़ी मानसिकता क्या है? इसका उत्तर हम हम सभी जानते हैं- अंग्रेजी मानसिकता है, जनता से दूरी बनाना! उस भाषा में बहस करना जिसे उनका मुवक्किल भी नहीं समझता हो कि न्याय या अन्याय किधर जा रहा है? किसी भी देश के लोकतंत्र के लिए यह अच्छा नहीं माना जा सकता। गृहमंत्री अमित शाह ने भी 14-15 सितंबर हिंदी दिवस पर फिर दोहराया कि "इस सरकार के नेतृत्व में सभी भारतीय भाषाएं आगे बढ़ रही है। उनमें कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है और हिंदी इन सबको जोड़ने वाली एक कड़ी है।"

क्या सचमुच भारत और भारतीय भाषाओं का वक्त आ गया है? पूरा तो नहीं लेकिन गाड़ी चल पड़ी है और जिस सितंबर के महीने में भारतीय संविधान में हिंदी को लोकतांत्रिक तरीके से उसकी पहुंच, व्यापकता सहजता जैसे गुणों के कारण राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ-साथ संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया गया था और इसी उपलक्ष्य में हर वर्ष उत्सव के रूप में मनाया जाता है, तब यह और महत्वपूर्ण है कि इसका पूरा आकलन किया जाए। केवल आकलन ही नहीं, उस पर कैसे निरंतर आगे बढ़कर भारत उस सच्ची आजादी को प्राप्त कर सकता है जैसे यूरोप के देश चीन, जापान और दक्षिण एशिया के देशो ने अपनी पहचान, भाषा और संस्कृति को बचाते हुए प्रगति की है। इसलिए सबसे पहले भारतीय भाषाओं की हाल की कुछ ऐतिहासिक उपलब्धियां पर नज़र डालते हैं।

जी-20 के मेजबान देश के रूप में जिस राष्ट्र को 'इंडिया' के नाम से दुनिया जानती थी उसे 'भारत' के रूप में जानने लगे हैं। लगभग सभी मंचों पर 'भारत' शब्द का इस्तेमाल हुआ। चाहे वह राष्ट्रपति के भेजे हुए आमंत्रण हों या प्रधानमंत्री का सभी बैठकों में उद्बोधन। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर औपचारिक कार्यवाही भी शुरु हो गई है और उसमें भी कोई दिक्कत नहीं आएगी। उसका सबसे बड़ा कारण संविधान में पहले से ही 'इंडिया' और 'भारत' शब्द शामिल था लेकिन बजाय 'भारत' शब्द को आगे बढ़ाने के हमने 'इंडिया' को आगे किया। खैर देर आए, दुरुस्त आए। हिंदी और भारतीय भाषाओं की प्राचीन परंपराओं के अनुरुप अब यह देश भारत कहलाता है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय भाषाओं के लिए बहुत ठोस कदम उठाए गए हैं। पहला युगांतरकारी परिवर्तन तो यह है की आजादी के बाद केवल हिंदी की बात की जाती थी और इसीलिए गैर हिंदी प्रांतों में कुछ डर की भावना राजनीतिक स्वार्थों से उभारी गई। उसके अंजाम अच्छे नहीं रहे और अच्छा हुआ कि उस समय इस बात को बहुत तूल नहीं दिया गया। लेकिन भारतीय भाषाएं लगभग हसिए की तरफ आ गई। 1991 के उदारीकरण के बाद तो अंग्रेजी को मानो खुली छूट मिल गई। यह भी आरोप है कि अमेरिका समेत पश्चिमी देश अंग्रेजी को बढ़ाने में जी-जान से जुटे रहे। कभी ग्लोबलाइजेशन के नाम पर, कभी ज्ञान की समृद्ध परंपरा और कभी शिक्षा को बेहतर करने के नाम पर। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है की सन 2000 के बाद से दुनिया भर में अंग्रेजी भाषा में छपने वाली सबसे ज्यादा किताबों की संख्या भारत में ही है। इसका कारण बहुत बड़ी जनसंख्या तो है ही, साथ ही जैसे-जैसे सरकारी स्कूल कम

होते गए और निजी स्कूल और विश्वविद्यालय बढ़ते गए, वहां से भारतीय भाषाएं लगभग गायब होती गई। हिंदी क्षेत्र में तो अंग्रेजी का दबदबा इतना बढ़ा है कि वो अंग्रेजी भी ठीक से सीख नहीं पाए और अपनी हिंदी भाषा से भी और दूर हो गए। इसका प्रभाव हिंदी की रचनात्मक उर्वरता और हिंदी समाज पर भी बहुत बुरा हुआ है। बांग्ला मराठी मलयालम तमिल कन्नड़ से भी अंग्रेजी का टकराव हुआ लेकिन दक्षिण के ये राज्य अपनी भाषाओं को बचाने में हिंदी से ज्यादा सक्षम साबित हुए हैं। इसीलिए नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ने का मूल मंत्र चुना गया है और लगातार उसके लिए प्रयास हो रहे हैं। पूरे देश में प्राइमरी शिक्षा उनकी मातृभाषा में दिए जाना अनिवार्य कर दिया गया है।

ताजा खबर यह भी है कि कर्मचारी चयन आयोग जो केंद्र सरकार के 25 मंत्रालयों के लिए कर्मचारियों की भर्ती करता है और जिसमें ज्यादातर अंग्रेजी का बोलबाला यूपीएससी से भी ज्यादा होता है, वहां अब 23 भारतीय भाषाओं में परीक्षा की तैयारी हो रही है। पिछले 8 सालों से यह परीक्षा हिंदी समेत 13 भाषाओं में हो रही है। 10 वर्ष पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। याद कीजिए, 2011 में तत्कालीन सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा 2011 के प्रथम चरण में ही अंग्रेजी लाद दी थी। नतीजा यह हुआ की 3 वर्ष में हिंदी और भारतीय भाषाओं में पढ़ने-लिखने वाले उम्मीदवार गायब हो गए। देशभर में छात्रों ने आंदोलन किया। सबसे पहले आवाज महाराष्ट्र और तमिलनाडु के विद्यार्थियों ने उठाई। मामला न्यायालय तक भी पहुंचा। दिल्ली के मुखर्जी नगर और करोल बाग में बच्चे सड़कों पर उतरे और अंततः 2014 में प्रथम चरण में थोपी गई अंग्रेजी को हटाया गया। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सरकार से पूछा की कोठारी रिपोर्ट के खिलाफ आखिर प्रथम चरण में अंग्रेजी की जरूरत के क्या कारण रहे? सरकार कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाई।

इसी का नतीजा है कि सिविल सेवा परीक्षा के परिणामों में हिंदी और भारतीय भाषाओं के उम्मीदवारों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। हाल के परिणामों में लगभग 8-9% बच्चे भारतीय भाषाओं के चुने गए हैं जबकि सन 80 और 90 में लगभग 15 से 20% प्रतियोगी अपनी भाषाओं में परीक्षा देकर चुने जाते थे। यहां यह भी उल्लेखनीय है की सिविल सेवा परीक्षा का मौजूदा मॉडल वर्ष 1979 में शिक्षा विद दौलत सिंह 'कोठारी आयोग' की सिफारिश के अनुसार लागू किया गया था और पहली बार एक लंबे विचार विमर्श के बाद भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की शुरुआत की गई थी। आजादी के लगभग 30 वर्ष बाद वर्ष 1976 में कोठारी कमेटी ने इन सिफारिश को यह कहकर शामिल किया था कि क्या टैलेंट सिर्फ अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वालों में ही होती है? भारतीय भाषाओं के अधिकांश बच्चे कहां जाएंगे? क्या इनका उच्च सेवाओं में जाने का कोई अधिकार नहीं है? इसलिए एक सच्चे लोकतंत्र में सभी भाषाओं को आठवीं सूची में उल्लेखित सभी भाषाओं को मौका मिलना चाहिए! उन्होंने अपनी सिफारिशों में यह तक कहा था की जिन अधिकारियों को भारतीय भाषाएं नहीं आती, उनको इस देश पर शासन करने का कोई हक नहीं है।" उन दिनों मोरारजी देसाई की जनता सरकार थी और सिफारिश को लागू कर दिया गया। इसका चमत्कारिक असर देखिए की 10 साल पहले जिस परीक्षा में बैठने वालों की संख्या सिर्फ 10000 के करीब थी, वर्ष 1979 में वह एक लाख से भी ज्यादा हो गई। यह होता है लोकतंत्र का विस्तार! लोक की भाषा से पहली बार वे उम्मीदवार इन सेवाओं में आए, जिनके मां-बाप बिना पढ़े-लिखे थे। यानी, पहली पीढ़ी के पढ़े हुए लोग उच्च प्रशासनिक सेवाओं में दाखिल हुए। वर्ष 1989 में 'सतीश चंद्र कमेटी' इस परीक्षा के समीक्षा के लिए गठित हुई और उसने माना की सिविल सेवा परीक्षा में भारतीय भाषाओं को शामिल करने से लोकतंत्र तो मजबूत हुआ ही है, भारतीय भाषाओं को भी सम्मान मिला है। 10 वर्ष बाद संघ लोक सेवा आयोग की परंपरा के अनुसार वर्ष 2000 में जाने-माने अर्थशास्त्री योगेंद्र अलग की अध्यक्षता में जो कमेटी बनी उसने भी भारतीय भाषाओं के प्रवेश पर मुहर लगाई। लेकिन अफसोस यूपीएससी की बाकी परीक्षाएं जैसे वन सेवा, आर्थिकी सेवा, मेडिकल सेवा, इंजीनियरिंग परीक्षा इत्यादि अभी भी सिर्फ अंग्रेजी माध्यम में ही होती हैं। यह पक्ष अभी भी अधूरा है और उम्मीद है कि सरकार आने वाले दिनों में इस पर ध्यान देगी।

इस उम्मीद के पीछे भी इस सरकार ने जो कदम उठाए हैं वे प्रशंसनीय है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई अभी तक केवल अंग्रेजी भाषा में ही होती थी। 3 वर्ष पहले इंजीनियरिंग की पढ़ाई भारतीय भाषाओं में भी शुरू कर दी गई है। पहले वर्ष लगभग 14 कॉलेज और पांच भारतीय भाषाओं के राज्य सामने आए थे। अब इनकी संख्या लगभग 25 कॉलेज और आठ भारतीय भाषाएं हो चुकी है। यह संदेश हर राज्य के उम्मीदवार और उनकी भाषाओं में पढ़ने-लिखने वालों के पास पहुंच गया है कि भारतीय भाषाओं में पढ़ने का भविष्य भी उतना

ही उजला है। मेडिकल की परीक्षा जो अंग्रेजी के बिना असंभव मानी जाती थी, मध्य प्रदेश ने सभी मेडिकल कॉलेज में अपनी भाषा हिंदी में पढ़ाकर संभव बना दिया है और वो भी पूरी तैयारी के साथ। अंग्रेजी से हिंदी में किताबें उपलब्ध कराई गई हैं और उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। इस पहलू पर ध्यान उन दिनों तब गया, जब रुस और यूक्रेन की लड़ाई में वहां पढ़ रहे 20000 भारतीय डॉक्टरों की पढ़ाई पर देश का ध्यान गया। पता लगा की सबसे पहले वहां उनकी प्रांतीय व राज्य की भाषा सीखनी पड़ती है। यानी दुनिया के सारे देश मेडिकल की पढ़ाई पहले अपनी भाषाओं की समझ से शुरु करते हैं लेकिन भारत में अंग्रेजी के दीवाने हिंदी में पढ़ने-लिखने से कतराते हैं। लेकिन अंततः भारतीय भाषाओं की लड़ाई जीत की तरफ हैं। इसीलिए मेडिकल प्रवेश परीक्षा, जिसे 'नीट' नाम से जाना जाता है और जो पहले सिर्फ अंग्रेजी में होती थी, वह आठ भाषाओं से शुरु होकर अब 15 भाषाओं में होने लगी है।

शिक्षा से गहरे जुड़े हुए लोग ही एहसास कर सकते हैं कि ग्रामीण अंचलों में सिर्फ प्रांतीय भाषाओं में ही बेहतर शिक्षा उपलब्ध है। अंग्रेजी के दबाव में तो बच्चे आत्महत्या तक कर लेते हैं। स्कूल छोड़ने की सबसे बड़े कारण विदेशी भाषा का लादना है। जून 2023 में ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कुछ और क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। यूजीसी ने आदेश जारी किए हैं कि जहां कुछ कारणों से केवल अंग्रेजी में ही पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं यदि वहां पढ़ने वाले विद्यार्थी अपनी भाषा में उत्तर लिखना चाहें तो उन्हें इसकी छूट होगी। यानी पहले ऐसा वक्त था की अंग्रेजी भले ही टूटी-फूटी आए लेकिन लिखना अंग्रेजी में होता था अब अपनी भाषाओं में लिखने की छूट दे दी गई है।

इस नजरिया से दिल्ली में स्थित जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, जामिया विश्वविद्यालय अंबेडकर आदि पर नजर डालना जरूरी है। यह सभी केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं। सबसे ज्यादा आर्थिक संसाधन इन विश्वविद्यालयों के पास हैं और सबसे ज्यादा सुविधाएं भी। लेकिन क्या कारण है कि कोठारी कमेटी ने वर्ष 1974 से 76 के बीच जब अपनी रिपोर्ट दी थी तब दिल्ली विश्वविद्यालय में लगभग 20% से ज्यादा बच्चे स्नातकोत्तर में अपनी भाषा हिंदी में पढ़ते थे, लेकिन धीरे-धीरे अंग्रेजी के कैंसर ने ऐसा असर किया की अपनी भाषाओं में पढ़ना पढ़ना ही बंद हो गया है और यह भी उसी राज्य में जो हिंदी भाषी क्षेत्रों में आता है। संविधान की धाराओं के अनुसार, जिसकी भाषा हिंदी है और इससे भी बड़ी बात की जहां पढ़ने वाले 80% छात्र हिंदी भाषी राज्य के हैं और पढ़ाने वाले भी लगभग 70% अध्यापक अच्छी हिंदी जानते हैं। वहां धीरे-धीरे अपनी भाषाओं में पढ़ना क्यों बंद हुआ? कहीं ना कहीं सत्ता की राजनीति और अंग्रेजी की गुलामी का असर था कि अंग्रेजी हावी होती गई है। इसे भारत सरकार के मंत्रालयों में नियुक्त हिंदी अधिकारी नहीं रोक सकते। इसे रोकने के लिए पहले सरकार और फिर समाज को आगे बढ़ना होगा। सबसे सुखद स्थिति इस समय यह है कि सत्ता की सीट पर बैठे प्रधानमंत्री गृहमंत्री और सभी राजनेता अपनी बात भारतीय भाषा और हिंदी में करते हैं। संसद में भी अधिकतर बहस हिंदी और भारतीय भाषाओं में होती है। राज्य की विधानसभाओं में तो ऐसा होता ही है। इस नजरिया से देखा जाए तो राजनेता जनता की भाषा लोक भाषा के ज्यादा नजदीक हैं बजाय नौकरशाहों के। लेकिन नौकरशाह भी गिरगिट की तरह बदल रहे हैं। यूपीएससी के इंटरव्यू बोर्ड और दूसरे मंचों पर अब वे हिंदी और भारतीय भाषाओं को हिकारत से देखने की जुर्रत नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री जब उनसे सीधे संवाद करते हैं तो हिंदी बोलने की कोशिश करते हैं। उन्हें पता है कि अंग्रेजी के नखरे उन्हें उनके पद से दूर कर सकते हैं।

इसका असर मीडिया में भी हुआ है। अंग्रेजी के दीवाने कई एंकर व मीडिया कर्मी पिछले कुछ वर्षों में भले ही अंग्रेजी में प्रश्न पूछें, लेकिन सामने वाला यदि हिंदी और भारत की भाषा में जवाब देता है तो वे भी हिंदी भाषा में प्रश्न करते हैं। यानी कि अब परिदृश्य बदल रहा है। न्यायालय में भी हिंदी का प्रवेश भले ही सीमित ही शुरु हो चुका है।सुप्रीम कोर्ट ने महत्वपूर्ण निर्णय को भारतीय भाषाओं में अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध कराया है और इसी का अनुकरण करते हुए उच्च न्यायालय वकीलों की बात उनकी अपनी भाषा में सुनने लगे हैं। केरल हाईकोर्ट ने तो लगभग 6 महीने पहले पहली बार अपना निर्णय मलयालम भाषा में दिया है। तमिलनाडु की सरकार ऊपर से भले ही हिंदी का विरोध करती रहे लेकिन अपनी तमिल भाष को पूरा महत्व देती है। श्री करुणा निधि की सफलता इसी बात में थी कि उन्होंने प्राथमिक स्तर पर अपनी भाषा में पढ़ना अनिवार्य कर दिया था। दक्षिण के ज्यादातर राज्यों में उनकी अपनी भाषा मैट्रिक तक अनिवार्य हैं और उससे आगे भी छात्र अपनी भाषा पढ़ते हैं। महाराष्ट्र के मैट्रिक पढ़ने वाले ज्यादातर छात्रों के पास तो चार भाषाएं (मराठी, इंग्लिश, हिंदी और संस्कृत या उर्दू) होती हैं। जुलाई 2023 में कर्नाटक के एक स्कूल में आठवीं की कक्षा में कन्नड़ पढ़ाना बंद कर दिया था। मामला मीडिया तक पहुंचा और राज्य सरकार ने तुरंत उस स्कूल को चेतावनी दी गई कि राज्य की भाषा

पढ़ना अनिवार्य है वरना आपकी मान्यता रद्द कर दी जाएगी। अपनी भाषा में पढ़ने के लिए कर्नाटक सुप्रीम कोर्ट तक गया और अंतत उनकी जीत हुई। पंजाब में आई नई सरकार ने भी सबसे पहला कदम यही किया कि दसवीं कक्षा तक पंजाबी भाषा को अनिवार्य किया और उसके माध्यम में पढ़ने को प्राथमिकता दी गई है।

यहां हिंदी भाषा राज्यों विशेष कर दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र के लिए कुछ सबक हैं। दिल्ली में लगभग 4000 (2000 सरकारी और 2000 निजी) स्कूल हैं। निजी स्कूलों में हिंदी मुश्किल से सिर्फ आठवीं तक पढ़ाई जाती है। आठवीं तक भी अंग्रेजी विदेशी भाषा तो होती ही है, साथ ही चीनी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाएं भी पढ़ाई जा रही हैं। इन निजी स्कूलों में 9वीं कक्षा में अंग्रेजी तो अनिवार्य रहती है किंतु हिंदी नहीं। हिंदी का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा और वह भी देश की राजधानी दिल्ली में, जहां साहित्य अकादमी है, हिंदी अकादमी है, भारत सरकार का गृह मंत्रालय है, राजभाषा विभाग है और सबसे ज्यादा हिंदी के 500 लेखक यहां रहते हैं। यदि हिंदी दसवीं तक भी नहीं पढ़ाई जाएगी तो कौन उनकी किताबों को पड़ेगा और खरीदेगा? क्या यह सांस्कृतिक संकट को आमंत्रण देना नहीं है? क्या भाषा के बिना कोई संस्कृति जीवित रह सकती है? क्या अकादमियां सिर्फ कुछ कुर्सी और कुछ बजट को खपाने के लिए बनी हैं?

हाल ही में राष्ट्रीय भाषा संगम की बड़ौदा में हुई गोष्ठी में गुजरात का अनुभव याद आता है। गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने बताया कि यहां भी स्कूलों में अंग्रेजी पैर प्रसार रहा था। गुजराती समाज इसके विरोध में उठ खड़ा हुआ। हर हफ्ते गुजरात साहित्य अकादमी के भवन से वहां के शिक्षा मंत्री और मुख्यमंत्री के पास जुलूस जाता रहा और 3 महीने में उन्हें यह मानना पड़ा कि गुजराती न केवल दसवीं बल्कि 12वीं तक पढ़ाई जाएगी। दिल्ली के लिए तो यह उदाहरण और भी प्रासंगिक है। हिंदी भाषा देश की राजधानी में दसवीं तक पढ़ना, हिंदी थोपना नहीं होगा। बल्कि इससे पूरे देश के लिए अपनी भाषाओं के पक्ष में एक अच्छा संदेश भी जाएगा। उसके बाद आप दूसरी भाषाएं पढ़ें, या कितनी भी विदेशी भाषाएं पढ़ें उस पर कोई रोक नहीं है।

इसलिए यहां के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में कम से कम दसवीं तक तो हिंदी तुरंत अनिवार्य की जाए और जरूरत हो तो हिंदी के लेखक, बुद्धिजीवी, पत्रकार बिना किसी राजनीतिक मतभेद के सामने आएं और सरकार को मजबूर करें। दक्षिण के राज्यों के 11वीं-12वीं के बच्चे भले ही इंजीनियर की तरफ जा रहे हों या मेडिकल परीक्षा की तरफ ज्यादातर मामलों में, उनके पास उनकी अपनी भाषा भी होती है और यही कारण है कि उनकी क्षमता, अपनी भाषा में भी होती है और अंग्रेजी में भी। ज्यादातर समाज शास्त्रियों का आकलन है कि समझ के लिए अपनी भाष बहुत जरुरी होती है और यही समझ उन्हें अपने समाज व उसकी समस्याओं को हल करने के काम आती है। यह अचानक नहीं है कि दक्षिण के राज्य उत्तर के मुकाबले में ज्यादा तार्किक और बेहतर विकास की तरफ अग्रसर हैं। फिर वह चाहे जनसंख्या नियंत्रण का मामला हो, स्त्री शिक्षा का हो, शिक्षा की बेहतरीन का हो या फिर कानून व्यवस्था का। व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में भी उत्तर भारत के मुकाबले वे कहीं बेहतर साबित कर रहे हैं। हिंदी भाषा के उत्सव को मनाते वक्त हम सब का यह दायित्व है कि हम अपने चारों तरफ शिक्षा का ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें बच्चे विदेशी भाषा के दबाव में किताबें और शिक्षा से दूर ना हो। गांधी जी को भी याद करते हुए कृपया सोचें कि सौ वर्ष पहले उन्होंने कितने जोर से अपनी भाषा में पढ़ने की वकालत की थी। अपनी भाषा में पढ़ेंगे-सोचेंगे तो उनकी रचनात्मकता कई गुना बेहतर होगी। वो वैज्ञानिक उपलब्धियां में आगे बढ़ेंगे। उद्योग व्यापार में सफलता पाएंगे। इन्हीं सबसे सांस्कृतिक-सामाजिक विकास होता है। अपनी मातृभाषा में ली गई शिक्षा पूरे परिदृश्य को बदल सकती है और किसी भी देश का उद्देश्य ऐसा ही समग्र विकास होना चाहिए।

**प्रेमपाल शर्मा**

*(जाने-माने लेखक और शिक्षाविद् प्रेमपाल शर्मा (पूर्व संयुक्त सचिव, भारत सरकार) वर्ष 1981 में सिविल सेवा की परीक्षा में चयनित हुए थे। अभी तक इनकी कुल 25 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। पिछले 30 से अधिक वर्षों में देश के लगभग सभी राष्ट्रीय अखबारों में इनके 1000 से अधिक लेख व स्तंभ प्रकाशित हो चुके हैं। ये वर्तमान समय में सिविल सेवा परीक्षार्थियों को पढ़ाने का कार्य करते हैं।)*

# ‘भारतीय भाषा दिवस’ के अवसर पर ‘भारतीय भाषा उत्सव-2023’ का भव्य आयोजन !

अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातारण बनाने और भाषाई सौहार्द विकसित करने के उद्देश्य से ‘इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार’ एवं ‘हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली’ के संयुक्त तत्त्वावधान में ‘भारतीय भाषा दिवस’ के उपलक्ष्य में बुधवार, 6 दिसम्बर, 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में ‘भारतीय भाषा उत्सव’ के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के ‘मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह’ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ । इस विहंगम सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम नाथ कोविन्द तथा विशिष्ट अतिथि के रुप में केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी की गरिमामयी उपस्थिति थीं। अन्य विशिष्ट अतिथियों के रुप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, डॉ. अजित कुमार, निदेशक (रा.भा.) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक मंचासीन थे । मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम का विधिवत रुप से शुभारम्भ किया गया।

चार सत्रों में विभाजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अपने स्वागत वक्तव्य में सुधाकर पाठक ने कहा कि छात्रों को भारतीय भाषाओं की जानकारी देने, अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करने और भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने पिछले वर्ष 2022 में भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर जोर देने के लिए गठित भारतीय भाषा समिति की सिफारिशों के बाद प्रत्येक वर्ष 11 दिसम्बर को ‘भारतीय भाषा दिवस’ के रुप में मनाए जाने की घोषणा की थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को चिट्ठी लिखकर निर्देश दिया था कि उत्तर-दक्षिण के सेतु के नाम से प्रसिद्ध महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती के अवसर पर स्कूलों और कॉलेजों में 11 दिसम्बर को भारतीय भाषा दिवस मनाया जाएगा। सरकार द्वारा घोषित ‘भारतीय भाषा दिवस’ का यह दूसरा संस्करण है और इस दिवस की महत्ता और उदेश्यों को देखते हुए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्यों को रेखांकित किया है, साथ ही इस भव्य आयोजन में अकादमी को विशेष सहयोगी के रुप में जोड़ा है। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी पिछले सात वर्षों से बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्रों और उनके भाषा शिक्षकों को सम्मानित करती आ रही है। अकादमी के इस महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार और उन्नयन करना है । प्रत्येक आयोजन में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों की संख्या में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। अब तक के आयोजन में इस सम्मान समारोह ने शैक्षिक, साहित्यिक एवं अकादमिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। अपनी मातृभाषा को लेकर समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। जिस तरह से छात्रों, शिक्षकों, विद्यालयों, अभिभावकों ने इस तरह के आयोजन को सराह है, उससे हमारा मनोबल बढ़ा है।

इ.गाँ.रा. कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने आधार वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं को लेकर यह अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं विशाल आयोजन है । आज इस सभागार में वे सभी विद्यार्थी उपस्थित हैं, जिन्होंने भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं । इनमें से बहुत से विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जिन्होंने 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि जब भी भाषा की बात आती है, भाषा के सम्मान की बात आती है, तो अक्सर ऐसे लोगों का सम्मानित किया जाता है, जो कॉलेजों में पढ़ाते है, विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हैं या भाषा पर किताब लिखते हैं। यह संभवत अपने आप में अनूठा उदाहरण है, जिसमें हम उन शिक्षकों को सम्मानित कर रहे हैं, जिन्होंने विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों को प्रेरित कर भाषा की ओर काम करने के लिए अग्रसर किया है।

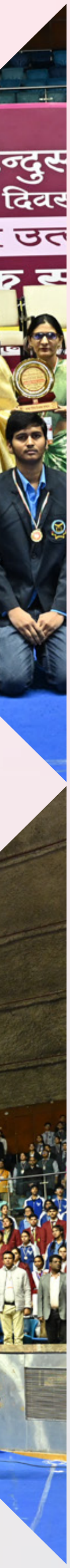

विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो वह कोई भाषा नहीं जानता। वह सबसे पहली भाषा वही सीखता है, जो उसकी माँ उसे सिखाती है। इसीलिए उसे मातृभाषा की संज्ञा दी गई है। उन्होंने कहा कि विदेशों में भारतीय भाषाओं को सिखाया जा रहा है। सबसे अनूठी बात यह है कि देश-दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति रुझान बढ़ा है। हमारी भाषाएँ बहुत प्राचीन हैं, जिन्होंने हमारी युवा पीढ़ी को जोड़ने का काम किया है। हमें अपनी भाषाओं को बढ़ावा देना होगा, तभी पूर्ण रूप से गुलामी की जंजीरे टूटेंगी। भाषा वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपना ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है। किसी भी व्यक्ति की सोचने, अनुसंधान करने, तर्क व निर्णय करने की प्रक्रिया मातृभाषा में ही होती है इसीलिए मोदी जी ने नई शिक्षा नीति में तकनीकी, उच्च व चिकित्सा शिक्षा को मातृभाषा में पढ़ाये जाने का प्रावधान किया। हमारी नई शिक्षा नीति सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, विकास व उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में मोदी सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविंद जी ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों और भाषा शिक्षकों को देखकर कहा कि मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है। इतना विराट, विशाल और वैभवशाली भारत आज मेरे सामने हैं। इस विहंगम दृश्य को देखकर कौन मुग्ध और मोहित नहीं होगा। मुझे इसे बात की प्रसन्नता है कि आज माली और फूल एक साथ बैठे हैं। शिक्षक के रूप में आप सभी गुरुजन माली और शिष्यों के रूप में उपस्थित सभी फूल। मैं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा देश के भविष्य और देश के भविष्य के निर्माताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने हेतु भारतीय भाषा उत्सव आयोजित करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सचमुच भाषा हमें गढ़ती हैं और अपनी मिट्टी से जोड़ने का काम भी करती है। भारत केवल प्राचीन सभ्यता के लिए ही नहीं, अपितु अपनी संस्कृति और भाषाई संस्कृति के लिए भी जाना जाता है। भाषा ही हमारे भीतर आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का विकास करती है। हमें संस्कारित करने के साथ मानवीय मूल्यों और मान्यताओं से भी जोड़ती है।

उद्घाटन सत्र के समापन में इ.गाँ.रा. कला केन्द्र के राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. अजित कुमार ने सभी का आभार ज्ञापन करते हुए कहा कि चिन्नास्वामी सुब्रह्मण्यम भारती जी की जयंती को 'भारतीय भाषा उत्सव' के रूप में मनाने से राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी और आने वाले वर्षों में इससे भी वृहत कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का शुभकामना सन्देश पढ़कर सुनाया। भाषा उत्सव के दुसरे सत्र में 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले दिल्ली एवं गुरुग्राम के प्रतिष्ठित 268 विद्यालयों 8166 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', शत प्रतिशत (100%) अंक प्राप्त करने वाले 145 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' एवं 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 745 भाषा शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। अपने-अपने विद्यालयों की वर्दी में सु-सज्जित छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति से ऑडिटोरियम शोभायमान था और यह दृश्य अपने आप में बहुत अद्भुत और अप्रतिम था।

कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में नई दिल्ली नगर निगम के उपाध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय, विशिष्ट अतिथियों के रूप में शिक्षाविद एवं जेल सुधारक डॉ. वर्तिका नंदा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. गिरीश नाथ, राजभाषा, गृह मंत्रालय के उप संपादक डॉ. धनेश द्विवेदी, शिक्षाविद एवं लेखक डॉ. पवन विजय, डॉक्टर जीतराम भट्ट, निदेशक, डा.गो.गि.ला.शा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, दिल्ली, डॉ. नमिता राकेश, वरिष्ठ साहित्यकार, किशोर श्रीवास्तव, लेखक, कवि व रंगकर्मी, श्री अनिल जोशी पूर्व राजनीतिक एवं पूर्व उपाध्यक्ष केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल उपस्थित थे।

**राजकुमार श्रेष्ठ**
**संयुक्त सम्पादक,**
**हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी**

# डॉ. अजित कुमार

निदेशक (राजभाषा अनुभाग), इं.गां.रा.क. केन्द्र

## हिंदी के विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर होते सशक्त कदम

सृष्टि के आरंभ काल से ही भाषा का गहरा नाता मानव समाज से जुड़ा हुआ है। भाषा मानव जीवन का ऐसा अभिन्न अंग है, जिसके अभाव में मानव मौन और असहाय प्रतीत होता है। इस विश्व में असंख्य महाद्वीप, विविध राष्ट्र और अनेक प्रांत समाहित हैं।भारतेंदु हरिश्चंद्र का यह अमर वाक्य, "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी, बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी," आज भी पूर्णतः सार्थक प्रतीत होता है। विदेशों से व्यापार के लिए संप्रेषण हेतु आवश्यकता अनुसार भाषा को अपनाना अनिवार्य हो जाता है। उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री और उनके प्रचार-प्रसार के लिए अपनाए जाने वाले माध्यमों में स्थानीय भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रायः हिंदी का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी अपने उत्पादों की बिक्री हेतु हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को अपना रही हैं।

आज संचार साधनों की प्रगति ने स्थानों के बीच की दूरियों को न केवल महत्वहीन बना दिया है, बल्कि एक प्रकार से समाप्त ही कर दिया है। संपूर्ण विश्व अब एक विशाल ग्राम के समान बन चुका है, जहाँ कभी भी, कहीं से भी, और किसी से भी त्वरित संपर्क स्थापित किया जा सकता है, यदि आपके पास इसके लिए आवश्यक साधन उपलब्ध हों। यह भी अनुमान व्यक्त किया जा रहा है कि वैश्वीकरण के इस युग में केवल विश्व की दस भाषाएं ही अस्तित्व में रहेंगी, जिनमें हिंदी भी एक प्रमुख भाषा होगी। वैश्वीकरण और बाजारवाद के संदर्भ में हिंदी का महत्व इस कारण बढ़ेगा, क्योंकि भविष्य में भारत व्यावसायिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक दृष्टि से एक समृद्ध और उन्नत राष्ट्र बनेगा।

*"मातृभाषा का करो प्रचार, हिंदी से ही देश उद्धार।"*

विश्वभाषाएं वे भाषाएं मानी जा सकती हैं, जिनके प्रयोक्ता विभिन्न देशों में बसे हुए हैं, किंतु विश्वभाषा के वास्तविक अधिकार का दावा उन भाषाओं को ही है, जो संसार के अधिकांश देशों में लिखी, बोली, पढ़ी, सुनी और समझी जाती हैं।वस्तुतः प्रत्येक विश्वभाषा के महत्वपूर्ण कार्य होते हैं—संचार और जनसंपर्क, साहित्यिक सृजन, शिक्षा और जनसंचार माध्यमों का संचालन, प्रशासनिक कार्य, व्यावसायिक और तकनीकी उपयोग, और विश्वबोध या वैश्विक चेतना की वृद्धि।विश्वभाषा से यह अपेक्षा की जाती है कि उसके बोलने और समझने वालों का भौगोलिक विस्तार व्यापक हो। आज भारत के अतिरिक्त नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फीजी, मॉरीशस, ट्रिनिडाड, गयाना, सूरीनाम, इंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषियों की समृद्ध उपस्थिति दृष्टिगोचर होती है। दूसरी अपेक्षा यह होती है कि भाषा में लचीलापन हो, वह विविध संदर्भों को व्यक्त करने में सक्षम हो, उसका एक सर्वस्वीकृत मानक रुप हो, और उपमानकों की सीमित स्वीकृति के साथ भी उसमें परस्पर संप्रेषणीयता बनी रहे। इन सभी गुणों की उपस्थिति हिंदी में भी विद्यमान है।

हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मागधी, छत्तीसगढ़ी और अनेकों उपभाषाओं के शब्द भंडार,

मुहावरे और लोकोक्तियां सहज रुप से समाहित हो चुकी हैं, जिससे उसका स्वरुप और अधिक समृद्ध एवं जीवंत हो गया है। इसके अतिरिक्त, हिंदी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों पुराना गहन और आत्मीय संबंध रहा है। विश्वभाषा से तीसरी अपेक्षा यह होती है कि उसमें वैश्विक चेतना और समग्र मानवता के भाव का समावेश हो। हिंदी भाषी, अपने ही देश के विभिन्न राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीय सीमाओं से ऊपर उठ चुका है। उसके पास ऐसा समृद्ध साहित्यिक विरासत है, जो विश्वभर के पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता रखता है।

हिंदी आज न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि वैश्विक परिदृश्य में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी एक प्रभावशाली विश्वभाषा है। यह भाषा भौगोलिक दृष्टि से अद्वितीय है क्योंकि इसके बोलने और समझने वाले संसार के सभी महाद्वीपों में फैले हुए हैं। जनसंख्या के आधार पर यह दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जो इसे जनतांत्रिक दृष्टि से भी विश्वभाषा बनाती है। विश्व के 132 देशों में बसे लगभग 2 करोड़ प्रवासी भारतीय हिंदी के माध्यम से न केवल अपने कार्यों का निष्पादन करते हैं, बल्कि अपनी संस्कृति और मूल्यों को भी जीवित रखते हैं। हिंदी का एशियाई भाषाओं में विशेष स्थान है, जो इसे एशिया की प्रतिनिधि भाषा बनाता है। यह भाषा सद्भावना का प्रतीक है क्योंकि इसका किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। यह अनेक भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर विश्व के सबसे समृद्ध शब्दकोश का निर्माण करती है। हिंदी भाषा अपने भीतर विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का समावेश करती है। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अरबी, फारसी, चीनी और जापानी जैसे विविध भाषाओं के शब्द हिंदी को वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से संपन्न बनाते हैं। हिंदी साहित्येतर लेखन में भी निरंतर वृद्धि हो रही है, और अनुवाद के माध्यम से साहित्य का स्तर ऊंचा हो रहा है।

***"हिंदी बोले भारत सारा, यही है विकास का आधार हमारा।"***

प्रवासी भारतीय हिंदी को वैश्विक मंच पर ले जाने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। आडियो-वीडियो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी एक जीवंत सांस्कृतिक कड़ी बन गई है। इंटरनेट पर हिंदी की लोकप्रियता ने इसे एक नए आयाम पर पहुंचा दिया है, जहां हिंदी पत्रकारिता और साहित्य विश्वभर में प्रसारित हो रहे हैं। देश-विदेश में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाएं, आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे माध्यम हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सशक्त बना रहे हैं। दुनिया के 175 देशों में हिंदी के शिक्षण और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित हो चुके हैं, और यह भाषा 180 से अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। अकेले अमेरिका में 100 से अधिक संस्थान हिंदी के अध्ययन-अध्यापन में सक्रिय हैं। चीनी भाषा के बाद हिंदी दुनिया में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है, और स्पेनिश, अंग्रेजी, अरबी, रुसी और फ्रेंच जैसी भाषाएं इसके बाद स्थान पाती हैं। हिंदी की यह व्यापकता, समृद्धि और वैश्विक स्वीकार्यता इसे वास्तव में एक विश्वभाषा का दर्जा प्रदान करती है।

हिंदी, विश्वभाषा बनने की राह पर, आज अनेक चुनौतियों से जूझ रही है। विदेशों में भारतीय संस्कृति का ह्रास और पश्चिमी भोगवादी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव ने हिंदी के प्रचलन को प्रभावित किया है। भारत से प्रवास करने वाले युवा और श्रमिक, जो हिंदी के प्रमुख आधार हैं, तेजी से अंग्रेजी के प्रभाव में आ रहे हैं, जिससे उनकी अगली पीढ़ी हिंदी से दूर होती जा रही है। संविधान में राजभाषा का दर्जा मिलने के बावजूद हिंदी को संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपेक्षित मान्यता नहीं मिल सकी है, जो हिंदी के लिए एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना और प्रयासों के बावजूद यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकी है। भारत विश्व बाजार से जुड़ तो रहा है, लेकिन यह जुड़ाव मुख्यतः अंग्रेजी तक सीमित है। विज्ञापन, संचार साधनों और सरकारी कार्यालयों में हिंदी का उपयोग अनुवाद आधारित और अप्राकृतिक हो गया है। कानूनी क्षेत्र में हिंदी की स्थिति और भी दयनीय है; उच्च न्यायालयों में सीमित प्रयोग और सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी की अनिवार्यता ने इसे हाशिये पर धकेल दिया है। विश्व व्यापार के दस्तावेजों और प्रक्रिया में भी हिंदी का उपयोग नगण्य है, जिससे यह भाषा केवल औपचारिकता और माल बेचने तक सीमित रह गई है।

हिंदी के वैश्विक प्रसार और उपयोग को साकार करने के लिए भाषा और देवनागरी लिपि का मानकीकरण अनिवार्य है, जो वर्तमान में सीमित दायरे में है। विदेशियों के लिए हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के विशेष पाठ्यक्रम तैयार करना आवश्यक है, ताकि वे विज्ञान, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में हिंदी माध्यम से दक्षता प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही, संदर्भ ग्रंथों, द्विभाषी और बहुभाषी शब्दकोशों का निर्माण और हिंदी शोध-अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सूचना क्रांति के दौर में हिंदी को कंप्यूटर और तकनीक की भाषा बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सॉफ़्टवेयर, कूटपद, और संकेताक्षरों का विकास आवश्यक है। हिंदी साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का विदेशों में मुद्रण, वितरण और अनुवाद के प्रयासों को भी सुदृढ़ करना होगा। योजनाओं का ठोस कार्यान्वयन और उनकी पूर्णता हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। इन प्रयासों से हिंदी एक सशक्त और प्रभावशाली विश्वभाषा के रूप में स्थापित हो सकेगी।

हिंदी आज भारत की संपर्क भाषा के रूप में अपनी सुदृढ़ पहचान बना चुकी है और अब विश्वभाषा बनने की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। भले ही हिंदी अभी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा न बनी हो, लेकिन उसकी अधिकांश एजेंसियों में यह व्यावहारिक रुप से मान्यता प्राप्त कर चुकी है। संयुक्त राष्ट्र संघ हिंदी में साप्ताहिक कार्यक्रम प्रसारित करता है, जो इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है। इसे आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए सघन प्रयास हो रहे हैं।

हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए विदेश मंत्रालय ने "हिंदी एवं संस्कृत प्रभाग" का गठन किया है, जो दूतावासों और अन्य संस्थाओं के माध्यम से विदेशों में हिंदी के प्रचार के लिए कार्यरत है। भारतीय संस्कृति संबंध परिषद (आईसीसीआर) ने अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पीठ स्थापित कर हिंदी शिक्षकों को प्रतिनियुक्ति पर भेजने और शोधकार्य बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हिंदी विश्व के बारह से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की मुख्य भाषा बन चुकी है और फिजी, गुआना,

सूरीनाम जैसे कई देशों में इसे अल्पसंख्यक भाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। भारत से बाहर यह विभिन्न वर्गों में प्रयोग होती है—जहां भारतीय मूल के लोग रहते हैं, दक्षिण-पूर्व एशिया के भारतीय संस्कृति प्रभावित देश, आधुनिक भाषा के रूप में इसे पढ़ाने वाले पश्चिमी देश और अरब देशों में व्यापार और संवाद के लिए। आवश्यकता है कि हिंदी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। यह तभी संभव है जब हम अपनी मानसिकता बदलें और इसे वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत रहें। हिंदी में वह सामर्थ्य है कि वह विश्व मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कर सके।

हमें अपनी मातृभाषा हिंदी के प्रति वही गौरव अनुभव करना चाहिए जो जापान, जर्मनी, रुस, फ्रांस, और चीन जैसे शक्तिशाली देश अपनी भाषा के प्रति करते हैं। ये देश अपनी मातृभाषा में वक्तव्य देते हैं और अनुवादकों के माध्यम से अपनी बात को विश्व तक पहुंचाते हैं। हिंदी को भी इसी दृष्टिकोण के साथ अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के प्रयासों की आवश्यकता है। हालांकि, हिंदी के समक्ष कई चुनौतियां हैं, जिनसे निपटने के लिए हमें अपनी कमजोरियों को समझकर, लक्ष्य को स्पष्ट रुप से निर्धारित कर, और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा। हिंदी के प्रसार और सशक्तिकरण के लिए ठोस, व्यावहारिक योजनाएं बनानी होंगी और उन्हें दृढ़ता तथा ईमानदारी से क्रियान्वित करना होगा। इसके साथ ही, समय-समय पर इन योजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। हिंदी को वैश्विक मंच पर अपना स्थान बनाए रखने के लिए हमें संगठित और सामूहिक प्रयास करने होंगे। यह तभी संभव होगा जब हम अपनी भाषा को आत्मगौरव और दृढ़ संकल्प के साथ अपनाएं और उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए कृतसंकल्प हों।

***"हिंदी है हमारी शान, देश की पहचान।***

# इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा हिंदी पखवाड़े 2024 का वृहत आयोजन

डॉ. अजित कुमार, निदेशक (राजभाषा)
ऋतु कुमारी (राजभाषा अधिकारी)

***हिंदी भाषा 70 प्रतिशत गांवों की अमराइयों में महकती है। हिंदी लोकगीतों की सुरीली तान में गूंजती है। हिंदी नवसाक्षरों का सुकोमल सहारा है। हिंदी अभिव्यक्ति का स्पंदन है। हिंदी कलकल-छलछल करती नदियों की तरह हर आम और खास भारतीय हृदय में प्रवाहित होती है।***

संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष **14 सितंबर** को 'हिंदी दिवस' के रुप में मनाया जाता है। हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की प्रतीत। हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। यही भारतीयता की पहचान भी है।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 04 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2024 को हिंदी पखवाड़े का बढ-चढकर आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ मंगलाचरण द्वारा किया गया। हम सब असत् से सत् की ओर, तमस से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर हो। इसी अभिलाषा के साथ केन्द्र के माननीय सदस्य सचिव एवं निदेशक (प्रशासन) एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष एवं निदेशक (राजभाषा), डॉ. अजित कुमार ने मंच पर आकर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत् शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर केन्द्र के सदस्य सचिव, माननीय डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने एक अपील जारी की। अपील के माध्यम से उन्होंने सभी को संदेश दिया कि हिंदी हमारी गौरवशाली सभ्यता की पुरातनता तथा समद्धि का परिचायक है। अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रुप है। आज हिंदी अपनी सहजता और सरलता के कारण न केवल देश के हर क्षेत्र में बल्कि विश्व पटल पर भी अपनी उपस्थिति प्रभावशाली ढंग से दर्ज करा रही है। चाहे वह आत्मनिर्भर भारती की संकल्पना हो या फिर एक भारत-श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना, उसमें हिंदी के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

इस अवसर पर केन्द्र में एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कार्यशाला के व्याख्याता के रुप में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने **'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की उपयोगिता'** पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान क्रमशः निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का जैसे हिंदी टिप्पण एवं प्रारुप लेखन प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, सदस्य सचिव हिंदी प्रोत्साहन प्रतियोगिता, (हिंदी में उत्कृष्ट कार्यों के लिए) हिंदी श्रुतलेख एवं सुलेख लेखन प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न किया गया।

इसी उपक्रम में केन्द्र में **"कविता और सितार वादन"** की जुगलबंदी, सुश्री स्मिता नागदेव एवं श्री राहुल शर्मा "राहुल्या" ने रामधारी सिंह दिनकर की कालजयी रचना रश्मिरथी पर आधारित एक की प्रस्तुति प्रस्तुत की एवं इस अद्भुत संगम को केन्द्र में खूब सराहा गया।

तत्पश्चात् केन्द्र में **"वेदान्ता संगीत ग्रुप"** द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गीत, संगीत, लोकगीत एवं देशभक्ति के गीतों की प्रस्तुती का मनमोहक प्रदर्शन किया गया जिसने सभी दर्शकों का मनजीत लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा के उन्नयन, उत्कर्ष एवं उसे सर्वजन बोध बनाने का जो उपक्रम पिछले 15 दिनों से किया जा रहा था उस कार्यक्रम की पूर्णता के अवसर पर माननीय सदस्य सचिव महोदय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र देकर उनका मनोबल बढाया।

इन आयोजनों के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना ही, राजभाषा अनुभाग का मुख्य उद्देश्य है। भाषा, वही गौरवान्वित मानी जाती है, जिसे बोलने वाले, गौरव की अनुभूति करें और उसे राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़कर प्रयोग करें। इन समस्त कसौटियों पर हिंदी खरी उतरती है। इसीलिए तो गोस्वामी तुलसीदास जी का 'रामचरित्रमानस', सूर और मीरा की सगुण भक्ति एवं कबीर का बीजक, भारत का अभिन्न अंग बन गए जिसका प्रवाह हमारे आधुनिक काल के कवियों जैसे जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा का छायावाद, प्रेमचन्द का यथार्थ और आदर्श तथा रामधारी दिनकर का प्रचंड ओज हिंदी में इस तरह ढल गया कि हम उस मानस को प्राप्त कर, उसी गति से कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं। हमें संस्कृति और मूल्यों को बरकरार रखना चाहिए और हिंदी दिवस इसके लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी दिवस के बहाने ही सही, आईये हम सब अपनी हिंदी को सहेजें, संवारे और प्रसारित करें।

***जय हिन्द, जय हिंदी।***

संस्कृति मंत्रालय
Ministry of Culture
Government of India

कला बनिधि प्रतिष्ठिता:
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

# इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

## अपील

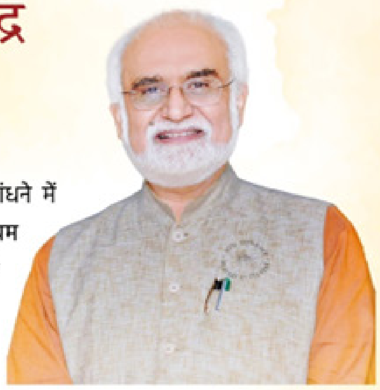

स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक हिंदी देश को एक सूत्र में बांधने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। हिंदी मात्र विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की प्रतीक है। राष्ट्रीय चरित्र और अस्मिता के प्रतीकों में भाषा प्रमुख है । विविधता में एकता को संजोने वाले हमारे देश भारत में अनेक भाषाएं और बोलियां हैं । विश्व में सबसे अधिक भाषाओं और बोलियों वाले देशों में हमारे देश की गिनती होती है । यह हमारी गौरवशाली सभ्यता की पुरातनता तथा समृद्धि का परिचायक है। अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है । आज हिंदी अपनी सहजता और सरलता के कारण न केवल देश के हर क्षेत्र में बल्कि विश्व पटल पर भी अपनी उपस्थिति प्रभावशाली ढंग से दर्ज करा रही है। चाहे वह **"आत्मनिर्भर भारत"** की संकल्पना हो या फिर **"एक भारत-श्रेष्ठ भारत"** की परिकल्पना, उसमें हिंदी के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

हिंदी हमारे राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर है। यह ज्ञान की भाषा है, व्यवहार की भाषा है, सम्पर्क की भाषा है और बाजार की भी भाषा है । अपनी सर्वव्यापकता के कारण हिंदी राष्ट्र भाषा तथा संघ सरकार की भाषा होने के साथ-साथ सबसे लोकप्रिय तथा स्वीकार्य भाषा भी है। इसलिए हिन्दी भारत की अन्य भाषाओं के साथ सहोदरत्व का भाव रखते हुए भाषाई एकता में प्रमुख भूमिका निभाती है।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में भाषा का प्रयोग और भी आसान हो गया है। विभिन्न हिंदी साफ्टवेयर की उपलब्धता से अब अंग्रेजी जानने वाले लोग भी अपना कामकाज बेझिझक हिंदी में कर रहे हैं । हम सब हिन्दी में काम कर सकते हैं, जरूरत केवल इच्छाशक्ति, मानसिक-परिवर्तन और स्वयं पहल करने की है।

हमारे देश की संविधान सभा द्वारा हिंदी को **14 सितम्बर, 1949** को संघ की राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया और तभी से प्रत्येक वर्ष यह दिन **"हिंदी दिवस"** के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस के अवसर पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र परिवार के सभी सदस्यों से आग्रह है कि हम सब राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में हरसंभव प्रयास करें और सरकारी कार्य में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। आईये, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को दोहरायें और यह सुनिश्चित करें कि हम अधिक से अधिक कार्य सरल और सुबोध हिंदी में करेंगे।

**हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं सहित ।**

दिनांक 14 सितम्बर, 2024

**डॉ. सच्चिदानंद जोशी**
**सदस्य सचिव**

ignca.gov.in | outreach.ignca@gmail.com | IGNCA | ignca_delhi

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
कला यस्मिन् प्रतिष्ठिता:

# भारतीय भाषा दिवस

## 2024